ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

भादों-आश्विन संवत् नानकशाही ५५७ सितंबर 2025 वर्ष १९ अंक १

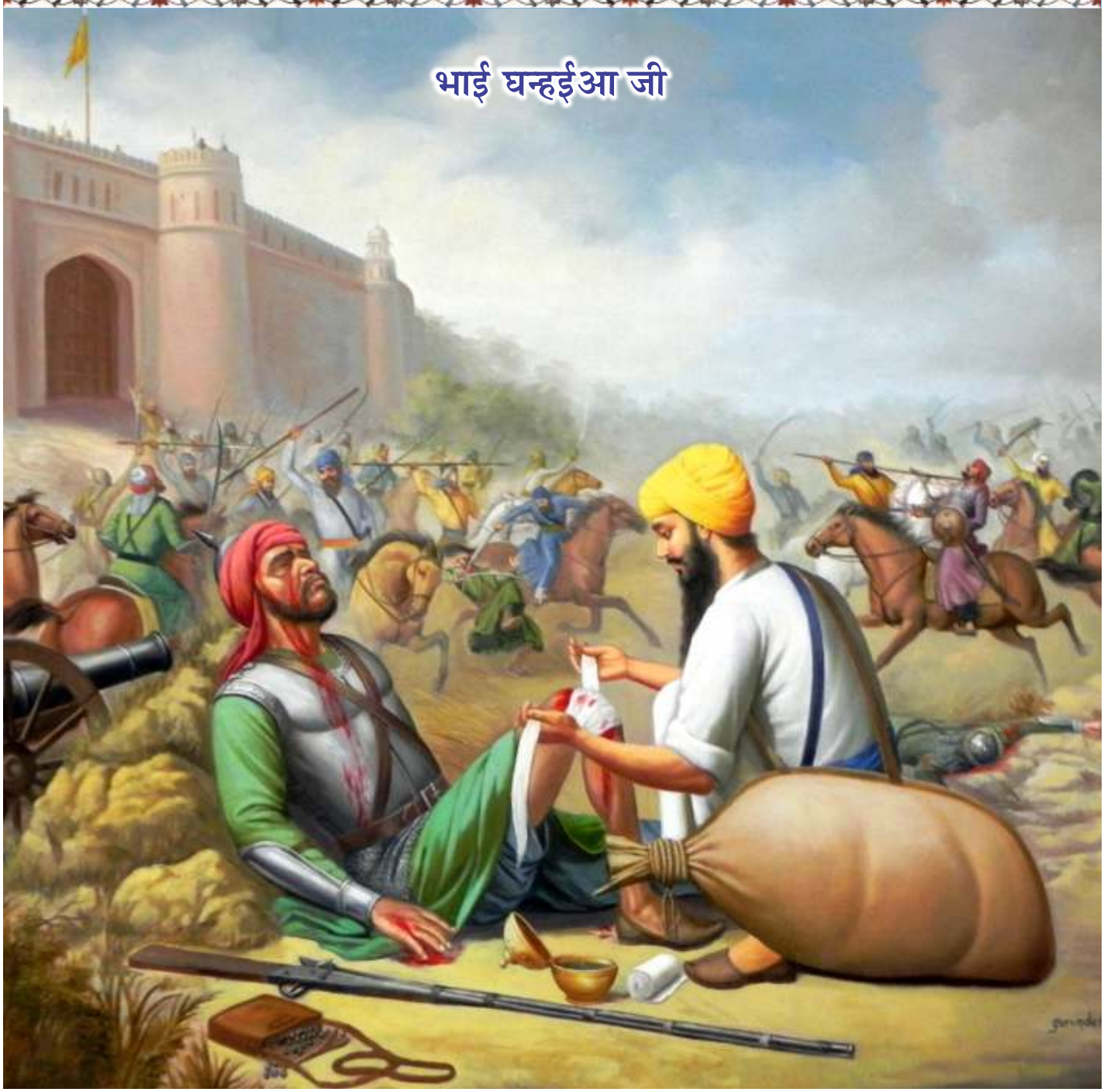

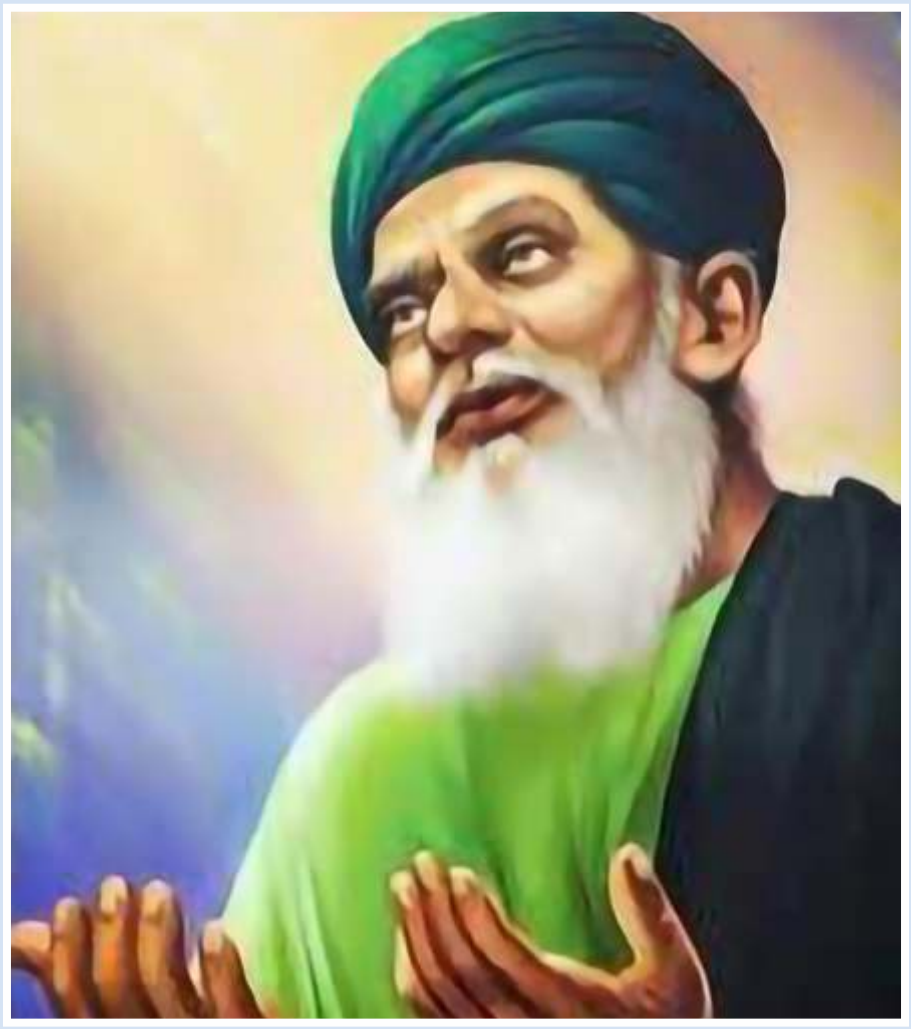

भक्त शेख फरीद जी

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

भादों–आश्विन संवत् नानकशाही 557
वर्ष 19 अंक 1 सितंबर 2025

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय–सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु ग्रंथ साहिब : एक संक्षिप्त परिचय 7
–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन
भक्त शेख फरीद जी का दर्शन 11
–डॉ. नरेश
सेवा, परोपकार और दया के सागर : भाई घन्हईआ जी 13
–डॉ. कशमीर सिंघ नूर
. . . भाई बचित्तर सिंघ 16
–डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
रामकली सदु 20
–डॉ. हरबंस सिंघ
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ 25
–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति
गुरमति में मानव सहभागिता की स्वर्णिम अवधारणा 27
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
अठारहवीं सदी की सिक्ख युद्ध-कला और युद्ध-कौशल 32
–डॉ. बलवंत सिंघ
कालापानी की सेलुलर जेल में वतन की खातिर मर-मिटने वाले स्वतंत्रता सेनानी 39
–प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर
ख़बरनामा 47

गुरबाणी विचार

असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई॥
ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई॥
झूठि विगुती ता पिर मुती कुकह काह सि फुले॥
आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले॥
दह दिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा॥
नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०८)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी तुखारी राग में उच्चरित 'बारह माहा' बाणी में अंकित इस पावन पउड़ी में आश्विन मास के मौसम, प्राकृतिक वातावरण एवं वनस्पति-चित्रण के माध्यम से जीव-स्त्री की प्रभु-पति से वियोग की मनोस्थिति की ओर संकेत करते हुए निर्मल, आध्यात्मिक व रूहानी गुणों का संचार करते हुए प्रभु-मिलन के गुरमति मार्गदर्शन का महान परोपकार करते हैं।

प्रभु से बिछड़ी जीव-स्त्री की ओर से गुरु जी फरमान करते हैं कि आश्विन का महीना आ गया है। हे मेरे प्रियतम! अब तो मेरे हृदय-घर में आ बसो, क्योंकि सांसारिक धंधों एवं विकारों में उलझ कर मेरी मन:स्थिति मृतक के समान हुई पड़ी है। हे प्रभु! यदि आप अपनी कृपा-दृष्टि करें तभी आपका नाकिट्य प्राप्त होता है वरना अन्य लगाव अथवा सांसारिक लगाव के प्रभाव में जीव-स्त्री अपने प्रभु-पति प्रियतम से नहीं मिल सकती। वह तो अनावश्यक सांसारिक झंझटों के चक्कर में ही फंसी रहती है।

संसार अस्थाई है, कूड़ है। इसमें उलझकर जीव-स्त्री दुख ही भोगती है। आश्विन मास में दरियाओं के किनारे जो कांस फूली हुई है, हे स्वामी! उसे देखकर मैं निमाणी जीव-स्त्री को अपनी तीव्र गति के साथ आ रही वृद्धावस्था का ख्याल सताता है। जो उष्णता का समय व्यतीत हुआ है (गर्मी के गुजर चुके मौसम में) वह ऊर्जा से भरपूर था, मन एवं तन शक्तिशाली थे, परंतु आगे तो शीत ऋतु आती दिखाई दे रही है, उसका ख्याल करके मन डरता है, डगमगाता है।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि आश्विन मास की इस ऋतु का गुण भी तो है। दसों दिशाओं में वनस्पति हरी-भरी है। इस हरियाली को देखकर तसल्ली एवं धैर्य भी हो रहा है कि यदि मैं जीव-स्त्री सहज गुरमति मार्ग को अपना लूं तो मीठा फल आगामी समय में मिल जाएगा। हे प्रियतम ! आश्विन के महीने में तू मुझ जीव-स्त्री को गुरु के माध्यम से आ मिल, तभी मेरा आश्विन का समय सौभाग्यशाली हो सकेगा।

संपादकीय

गुरबाणी का अदब-सत्कार

यह एक अच्छी बात है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब से अधिक से अधिक जीवन- लाभ लेने के लिए विश्व स्तर पर एक नयी चेतना जागृत हुई नज़र आ रही है। पवित्र बाणी को पढ़ा जा रहा है, सुना व समझा जा रहा है, अध्ययन किया जा रहा है। सजग लोग इस पवित्र बाणी पर अमल करते हुए अपना लोक-परलोक संवार रहे हैं। इस सबके विपरीत गुरबाणी के पठन-पाठन में त्रुटियां पाए जाने को लेकर सिक्ख संगत को ऐसे हालात में सद्बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए बाणी-शुद्धता की मर्यादा को बनाए रखना है।

अच्छी बात है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति लोगों में गहरा विश्वास और श्रद्धा-भावना देखने में आ रही है। विश्वास और श्रद्धा तो मूल रूप से धर्म की बुनियाद होते हैं। विश्वास और श्रद्धा-भावना के बिना किसी भी धर्म का अस्तित्व स्थिर नहीं रह सकता। इसके साथ ही जुड़ा एक अन्य पहलू यह भी है कि हमारा विश्वास, हमारी श्रद्धा-भावना किस प्रकार की है। क्या यह हमारे दिल की गहराइयों में से पैदा हो रही है या यह दूसरे लोगों को दिखाने के लिए ही है? इस सवाल पर योग्य विचार करनी ज़रूरी है।

दूसरी बात, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को जब श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब में शोभित किया गया, इसका पावन प्रकाश किया गया, तब गुरु-घर के साथ लम्बे समय से अंतरमन से जुड़े विशाल अनुभव वाले बाबा बुड्ढा जी को इसके 'प्रथम ग्रंथी' होने का सम्मान पंचम पातशाह जी ने प्रदान किया। बाबा जी ने यह महान ज़िम्मेदारी पूरे समर्पण-भाव के साथ निभाई। ऐसा करके आपने एक ऊँचा और निर्मल उदाहरण पेश किया कि बाणी के प्रति श्रद्धा-भावना को इस प्रकार प्रकट करना है, बाणी का सत्कार इस प्रकार करना है। जैसे-जैसे गुरुद्वारा साहिबान का विकास हुआ, इसके साथ ही ग्रंथी सिंघों की श्रेणी में भी बढ़ोत्तरी होने लगी। इस श्रेणी का श्री गुरु ग्रंथ साहिब की मर्यादा को तनदेही के साथ निभाने में मुख्य योगदान है। मर्यादा को पूरी तनदेही के साथ निभाने वाले सभी ग्रंथी साहिबान प्रशंसा के पात्र हैं। सिक्ख पंथ उनके सम्मान के प्रति सचेत भी है। श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब की मर्यादा विलक्षण है। यह सर्वश्रेष्ठ मर्यादा अपार

शोभा देती है। यह देखने वालों को आनंद और तुसि प्रदान करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति हम अपनी श्रद्धा भेंट करते हैं और अपना सिर झुकाते हैं।

सिक्ख पंथ की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के संचालन में गुरुद्वारा साहिबान में मर्यादा का पालन किया जा रहा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की मर्यादा सही रूप में गुरुद्वारा साहिबान में निभाई जा रही है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमारे गुरु हैं। सिक्ख पंथ के लिए हाज़िर-नाज़िर गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सत्कार बेहद ज़रूरी है। इसमें ज़रा-सी भी ढील हमारे लिए गलत बात है।

हाल ही में गुरबाणी के साथ जुड़े कुछ संवेदनशील मामले हमारे सामने आ रहे हैं। आधुनिक समय में मोबाइलों तथा अन्य डिजिटल उपकरणों पर गुरबाणी को विभिन्न माध्यम से डाउनलोड करने और उससे गुरबाणी पढ़ने-सुनने का रुझान बढ़ा है। बेशक यह कोई गलत बात नहीं कि हमें तकनीक का सहारा लेते हुए गुरबाणी के साथ जुड़ना चाहिए, परंतु इसके साथ ही कुछ अन्य बातों का भी ध्यान रखना चाहिए, जो कि गुरबाणी के सत्कार के साथ जुड़ी हुई हैं और हमारे सामने आ रही हैं। मोबाइल फोनों पर इस्तेमाल की जाने वाली कुछ ऐप्स ध्यान में आ रही हैं जिनमें पवित्र गुरबाणी की पंक्तियों के शब्द-जोड़ सही नहीं हैं। यह एक तरह से गुरबाणी की बेअदबी है। गुरबाणी के सत्कार के संदर्भ में यदि गुरु-इतिहास को पढ़ा जाये तो श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने पुत्र रामराय को औरंगजेब के दरबार में गुरबाणी के केवल एक शब्द 'मुसलमान' की जगह 'बेईमान' कहने-मात्र से ही सिक्खी से ख़ारिज कर दिया था। गुरबाणी के साथ छेड़छाड़ करने वाले तो महादोषी हैं। गुरबाणी ऐप्स बनाने वालों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि गुरबाणी के मूल स्वरूप को बिगाड़ने की कोशिश न की जाये।

ऐप्स बनाने और गुरबाणी का प्रचार करने की आड़ में गलत शब्द-जोड़ में बाणी लिखने वाले लोगों को हम सख़्त ताड़ना करते हैं। ऐसी ऐप्स के जरिए पैसा इकट्ठा करने वाले गुरबाणी की बेअदबी के रुझान को बढ़ावा दे रहे हैं। वे ऐसा न करें तथा सिक्ख भावनाओं को समझते हुए, पावन गुरबाणी के सत्कार को मुख्य रखते हुए, अपनी ऐप्स में सुधार करें, ताकि गुरबाणी का अदब और सत्कार बना रहे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब : एक संक्षिप्त परिचय

*–स. परमजीत सिंघ सुचिंतन**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पृष्ठभूमि : श्री गुरु नानक देव जी ने, अपने समकालीन व अपने से पहले के विभिन्न महापुरुषों द्वारा उच्चरित बाणी को, स्वयं उन महापुरुषों से व अन्य प्रमाणिक स्रोतों से एकत्रित किया तथा इस बाणी को व अपने द्वारा उच्चरित बाणी को द्वितीय गुरु श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप दिया। इसके पश्चात् श्री गुरु अंगद देव जी ने, श्री गुरु नानक देव जी द्वारा सौंपी गई समस्त बाणी तथा अपने द्वारा उच्चरित बाणी एकत्रित करके श्री गुरु अमरदास जी को सौंप दी। यह सिलसिला पांचवे गुरु, श्री गुरु अरजन देव जी तक चलता रहा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने से पूर्व चार गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित बाणी के साथ-साथ, अपने द्वारा उच्चरित बाणी, १५ भक्त साहिबान, ११ भट्ट साहिबान व गुरसिक्खों द्वारा उच्चरित बाणी को एक स्थान पर एकत्रित किया तथा एक निश्चित क्रम में संकलित व संपादित करके 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' तैयार किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने समूची बाणी के संकलन व सम्पादन का कार्य गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब श्री अमृतसर साहिब नामक स्थान पर किया। लिखारी की सेवा भाई गुरदास जी से करवाई।

'पोथी' (श्री आदि ग्रंथ साहिब) की जिल्द की सेवा भाई बन्नो जी ने की। पहले पहल इसे 'पोथी साहिब' का नाम दिया गया 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' का पहला प्रकाश सन् १६०४ ई. में श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब में किया गया। 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' का प्रकाश होने के बाद श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं नीचे आसन लगाया। 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' की सेवा-सम्भाल करने के लिए, 'प्रथम ग्रंथी' की सेवा, गुरु-घर के स्नेही सिक्ख बाबा बुड्ढा जी को बख़्शिश की गई। सन् १६०४ ई. में जब 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' का पहला प्रकाश किया गया तो हुकमनामा आया :

संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम॥. . .

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७८३)

तत्पश्चात् श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने, साबो की तलवंडी, ज़िला बठिंडा में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी को 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' में सम्मिलित करके, 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के रूप में वर्तमान स्वरूप तैयार करवाया तथा अपने अन्तिम समय सन् १७०८ ई. में श्री हजूर साहिब नांदेड़ की पावन धरती पर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई

**७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना—१४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००*

सौंप दी और 'जागत-ज्योति गुरु' का स्थान प्रदान किया :

सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानिओ ग्रंथ।

भावार्थ : सभी सिक्खों को यह आदेश है कि वे आज के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु मानें, किसी और को नहीं। इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सदैव काल के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को, सिक्खों का गुरु बना दिया।

गुरबाणी का विवरण : वर्तमान में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के कुल १४३० पन्ने (अंग) हैं। इन १४३० पन्नों पर शोभायमान बाणी का विवरण निम्नानुसार है :—

नित्तनेम की बाणियां (पन्ना १ से १३ तक)

रागबद्ध बाणियां (पन्ना १४ से १३५३ तक)

(इस भाग में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में रागबद्ध बाणियों को विभिन्नतया ३१ रागों में शोभायमान किया गया है।)

रागमुक्त बाणियां (पन्ना १३५३ से १४३० तक)

(इस भाग में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में, रागमुक्त बाणियों को शोभायमान किया गया है।)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार : श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बाणीकार भिन्न-भिन्न समुदायों, वर्गों, क्षेत्रों, प्रान्तों, सम्प्रदायों तथा जातियों से सम्बन्धित थे। यह अपने आप में एक विलक्षण तथा आश्चर्यजनक तथ्य है। इन बाणीकारों का विवरण निम्नानुसार है :—

६ गुरु साहिबान— श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी व श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी।

१५ भक्त साहिबान— भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी, भक्त रविदास जी, भक्त शेख़ फरीद जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त धंना जी, भक्त बेणी जी, भक्त जैदेव जी, भक्त भीखन जी, भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी, भक्त सधना जी, भक्त रामानन्द जी, भक्त परमानंद जी एवं भक्त सूरदास जी।

११ भट्ट साहिबान— भट्ट कलसहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट सल जी, भट्ट भल जी, भट्ट नल जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट मथरा जी, भट्ट बल जी एवं भट्ट हरिबंस जी।

गुरसिक्ख— गुरु साहिबान, भक्त साहिबान, भट्ट साहिबान के अतिरिक्त गुरसिक्खों की बाणी भी शोभायमान है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विलक्षणताएं : श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अनेक विलक्षणताओं में से प्रमुख विलक्षणताएं निम्नानुसार हैं:—

श्री गुरु ग्रंथ साहिब मात्र एक ग्रंथ ही नहीं हैं अपितु जागत-ज्योति गुरु हैं, जो कि मनुष्य-मात्र को सत्य, नैतिकता, प्रेम, एकता तथा विश्व-बन्धुत्व का सन्देश देते हैं। हम सभी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का जागत-ज्योति गुरु की भाँति ही सम्मान करना चाहिए।

इस संसार में रहने वाला कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, क्षेत्र का हो, श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान बाणी को पढ़ कर, विचार कर व अपने जीवन में अपना कर लाभ ले सकता

है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान बाणी समूची मानवता के लिए है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब किसी एक धर्म, जाति, वर्ग या समुदाय के गुरु नहीं हैं, वे तो समूची मानवता के गुरु हैं। संसार का प्रत्येक व्यक्ति श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं, उपदेशों को अपने जीवन में अपनाकर लाभ प्राप्त कर सकता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी, बिना किसी जाति, धर्म, रंग, वर्ग, समुदाय या वर्ण-भेदभाव के, सरबत्त के भले (Welfare unto All) की विचारधारा को प्रसारित करने की प्रेरणा देती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान बाणी की एक और विलक्षणता यह भी है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी प्रमाणिक है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा को समय-सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यह विचारधारा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी आज से ५५० वर्ष पूर्व थी। युगों-युगों तक इस विचारधारा की महत्ता व सार्थकता ज्यों की त्यों बनी रहेगी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब एकमात्र ऐसे गुरु हैं जो समूची मानवता को युगों-युगांतरों तक ज्ञान का प्रकाश देते रहेंगे।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब पूर्ण गुरु हैं तथा हमारे जीवन के प्रत्येक पक्ष— आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यवहारिक, नैतिक, राजनीतिक व शैक्षणिक में हमारा नेतृत्व करते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी हर प्राणी-मात्र की व्यवहारिक प्रक्रिया के साथ ऐसे जुड़ी हुई है कि हर जिज्ञासु को अपने मन की वेदना का उत्तर प्राप्त हो जाता है। इस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में आए हुए सभी प्राणी, सांसारिक या आध्यात्मिक कार्य के लिए गुरु साहिब से प्रेरणा प्राप्त कर तृप्त रहते हैं।

यद्यपि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विभिन्न महापुरुषों की बाणी सुशोभित है तथापि सबका केन्द्र-बिन्दु एक अकाल पुरख होने के कारण किसी भी विषय पर कोई विरोधाभास नहीं है। समूची बाणी एक ही सूत्र में पिरोयी माला के समान है। एक ऐसी माला, जिसमें सभी मोती, रत्न व हीरे आदि अपने-अपने स्थान पर सुशोभित हैं। जब श्री गुरु अरजन देव जी 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' की बाणी का संकलन व संपादन कर रहे थे, तभी कुछ 'भक्त', जैसे कि पीलू, छज्जू, शाह हुसैन आदि श्री गुरु अरजन देव जी के पास आए और कहने लगे कि हमारी रचनाएं भी 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' में सम्मिलित करो। क्योंकि उनकी रचनाएं 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' की विचारधारा से मेल नहीं खाती थीं, इसलिए श्री गुरु अरजन देव जी ने उनकी रचनाओं को 'श्री आदि ग्रंथ साहिब' में सम्मिलित करने से इन्कार कर दिया। इससे ये 'भक्त-जन' श्री गुरु अरजन देव जी से नाराज व क्रोधित होकर वापिस चले गए तथा शाही दरबार में जाकर श्री गुरु अरजन देव जी के विरुद्ध जहर उगलने लगे। अपने असर-रसूख के कारण श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी में भी उन्होंने एक प्रकार से परोक्ष रूप से नकारात्मक भूमिका निभाई थी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब दुनिया के एकमात्र ग्रंथ हैं, जिसमें विभिन्न जाति-धर्मों के महापुरुषों द्वारा केवल एक परमेश्वर की कीर्ति गायन की गई है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान समूची बाणी, सर्वशक्तिमान एक अकाल पुरख की उपमा व उपासना करने की प्रेरणा करती है अर्थात् पारब्रह्म के निर्गुण व निराकार स्वरूप की उपासना करने का उपदेश देती है। गुरबाणी में जहाँ कहीं भी राम, माधो, बीठल, हरि, गोबिंद या अल्लाह आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है, वह निर्गुण स्वरूप परमात्मा के लिए हुआ है। हाँ, कहीं-कहीं जहाँ किसी ऐतिहासिक दृष्टान्त का वर्णन किया गया है, वहाँ उस सिद्धान्त को समझाने के लिए किसी व्यक्ति/देवता/महापुरुष के नाम का वर्णन अवश्य हुआ है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी में विभिन्न भाषाओं— पंजाबी, फारसी, हिन्दी, मराठी, संस्कृत, अरबी, बृज आदि का उपयोग किया गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की समूची बाणी को 'गुरमुखी लिपि' में लिखा गया है।

गुरबाणी में से मिलती प्रमुख शिक्षाएं : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान समूची बाणी एक आदर्श जीवन जीने की राह बताती है। जीवन के विभिन्न पड़ाव पर, विभिन्न परिस्थितियों में, दुख-सुख में, खुशी-गमी में, हमें क्या करना चाहिए, इसका राह दर्शाती है। विपरीत व विपत्ति भरी परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति तथा सुखों व खुशियों को संभाल लेने की बुद्धि, हमें गुरबाणी से प्राप्त होती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा के केन्द्र-बिन्दु निम्नानुसार हैं :—

सर्वशक्तिमान तथा निराकार व निर्गुण स्वरूप अकाल पुरख का नाम-सुमिरन करना।

सच्ची-सुच्ची (विशुद्ध) किरत करना अर्थात् मेहनत व ईमानदारी से जीविकार्जन करना।

अर्जित धन व ज्ञान से ज़रूरतमंदों की सहायता करना।

परस्पर प्रेम-प्यार व ईमानदारी वाला जीवन जीना।

सभी मनुष्यों के साथ बिना किसी जाति, धर्म, रंग, वर्ग, वर्ण, समुदाय आदि भेदभाव के, समान दृष्टि से व्यवहार करना। छुआ-छूत व ऊंच-नीच आदि से मुक्त रहना।

सत्य की राह अपनाना तथा सरबत्त के भले के मार्ग पर चलना।

व्यक्तित्व के विकास में नैतिक गुणों को ग्रहण करने पर बल देना।

धर्म के नाम पर हो रहे कर्मकाण्डों, पाखण्डों, आडम्बरों, मूर्ति-पूजा, व्रतों आदि का परित्याग करना।

आध्यात्मिकता को सर्वोपरि रखते हुए सभी धर्मों को व उनके अनुयायियों को बिना किसी भेदभाव के उचित सम्मान देना।

भक्त शेख फरीद जी का दर्शन

*–डॉ. नरेश**

ऋषियों-मुनियों-गुरुओं की यह पावन भूमि 'भारतवर्ष' आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान की वाहक रही है। यह वो देश है जिसके वातावरण में कहीं वेदों की ऋचाएं गूंज रही हैं तो कहीं हवाओं के कंधों पर उड़कर अज़ान की आवाजें और कहीं गुरबाणी के पाठ के मधुर स्वर गूंज रहे हैं। आध्यात्मिकता के इसी गगन का उज्जवल नक्षत्र हैं भक्त शेख फरीद जी। आपकी महानता का परिचय देने के लिए इतना बताना ही पर्याप्त होगा कि तीन शताब्दियों तक गतिमान रहकर जब आपकी ख्याति श्री गुरु नानक देव जी तक पहुँची तो वे स्वयं चलकर पाकपत्तन गए और आपके बारहवें उत्तराधिकारी से आपकी बाणी ले आए। पंचम गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन करते समय आपकी बाणी को भी दर्ज किया।

भक्त शेख फरीद जी एक सच्चे मुसलमान संत थे। रोज़ा-नमाज़ की पाबंदी उनके जीवन का अटूट अंग थी। उनके निकट नमाज में झुका हुआ सिर बहुत महत्वपूर्ण था। भक्त शेख फरीद जी का विश्वास था कि जो व्यक्ति परमात्मा के आगे शीश नहीं झुकाता, वह अपने अहंकार में ग्रसित ऐसा नारकीय प्राणी है कि उसे अपने अतिरिक्त किसी दूसरी सत्ता पर विश्वास ही नहीं है। उसके निकट नमाज़ से विमुख प्राणी तथा पशु में कोई अंतर नहीं है।

भक्त शेख फरीद जी तरीक़त और शरीअत दोनों में विश्वास रखते थे। भक्त शेख फरीद जी की रचनाओं के अनुसार यह संसार मायाजाल है। यहां हर समय मनुष्य की परीक्षा होती रहती है। मोह-माया के जंजाल में फंसकर जो व्यक्ति अपने स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार कर बैठता है वह न केवल प्रभु की विद्यमानता एवं सत्ता को ही नकारता है अपितु परीक्षा में अनुत्तीर्ण भी होता है। भक्त शेख फरीद जी के निकट मोह-माया से बचने का सरल-सा मार्ग

**१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला–१३४१०९, फोन : ९४१७३-६५६७६*

यही है कि मनुष्य (मन) शैतान के बहकावे में न आए। सतर्कता बरतने का सरल उपाय यह है कि वह हर समय उस अज़ाब (दुख) को याद रखे जो उसकी आत्मा को मरणोपरांत प्राप्त होगा और सबसे बड़ी बात यह ध्यान में रखे कि अंततोगत्वा उसके कर्मों का लेखा-जोखा होना है। भक्त शेख फरीद जी कहते हैं :

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि॥
मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८१)

भक्त शेख फरीद जी इस भ्रमजाल से बचने का साधन भी बताते हैं— वो है मन की स्थिरता। मन की अस्थिरता ही है जो अहंकार की जन्मदाती है, विकार को उत्तेजित करती है और सही मार्ग से विचलित कर मनुष्य को गलत रास्ते पर परिचालित करती है। भक्त शेख फरीद जी का दर्शन इस उपदेश में स्पष्ट है :

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि॥
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३८१)

मन की भूमि यदि समतल हो जाए, अपने-पराए का भेद यदि मिट जाए, तो साधना का मार्ग सुगम हो जाता है। स्थिर मन विकारहीन नहीं होता। विश्वास की दृढ़ता के लिए पहली शर्त है— निश्चयात्मकता। निश्चय इस सत्य एवं तथ्य का कि परमात्मा संपूर्ण ब्रह्माण्ड में विद्यमान है और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड परमात्मा का ही अंश-विस्तार है। इसे अन्तत: परमात्मा में ही विलीन हो जाना है।

भक्त शेख फरीद जी की बाणी जिस दर्शन को हमारे सामने प्रस्तुत करती है, वह दर्शन सार्वभौमिकता का वाहक है। सरल शब्दों में उसे इस प्रकार भी प्रस्तुत किया जा सकता है कि आत्मा परमात्मा का अंश है, जो उसके विरह की अनुभूति के द्वारा ही पुन: अपने मूल रूप को प्राप्त हो सकती है। इस प्राप्ति के लिए जो मार्ग भक्त शेख फरीद जी बताते हैं, वो है संसार की क्षणभंगुरता को स्वीकार करना, गुरु की शरण ग्रहण करना, आत्मतत्व की पहचान करना तथा परमात्मा की इच्छा को सर्वोपरि स्वीकार करना।

सेवा, परोपकार और दया के सागर : भाई घन्हईआ जी

*–डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

सिक्ख धर्म में प्रभु का नाम श्वास-श्वास जपने के साथ-साथ गुरु-घर की सेवा तथा दीन-दुखियों, मसकीनों, जरूरतमंदों की सेवा सच्ची भावना व निष्ठा के साथ करने का सिद्धांत पाया जाता है। सिक्ख समुदाय से संबंधित अनेक लोग एवं संस्थाएं व संगठन अभावग्रस्त लोगों, बीमारों, गरीबों, दीन-दुखियों, जरूरतमंदों की सेवा व सहायता करने में दिन-रात लगे रहते हैं। इन सबके प्रेरणास्रोत व मार्गदर्शक यदि भाई घन्हईआ जी को माना जाए, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भाई घन्हईआ जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए लाचार, बेसहारा, अनाथ, दिव्यांग लोगों की निष्काम सेवा करने हेतु भगत पूरन सिंघ ने श्री अमृतसर साहिब में विश्व-प्रसिद्ध संस्था 'पिंगलवाड़ा' की स्थापना देश-विभाजन के बाद की थी।

भाई घन्हईआ जी ने विश्व को उस मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित व उत्साहित किया, जिस मार्ग पर चलकर नि:स्वार्थ भावना से जात-पाँत का, धर्म व संप्रदाय का भेद किए बिना दीन-दुखियों, लाचारों, बीमारों की सच्चे मन से सेवा की जा सकती है और भाईचारा, सद्भावना, प्रेम-प्यार को बढ़ावा दिया जा सकता है; भेदभाव एवं वैमनस्य को समाप्त किया जा सकता है।

गुरबाणी का सच्चे हृदय से सम्मान व इसे प्यार करने वाले ब्रह्मज्ञानी भाई घन्हईआ जी का जन्म सन् १६४८ ई. में माता सुंदरी तथा श्री नत्थू राम के घर गाँव सौदरा, ज़िला सियालकोट (पाकिस्तान) में हुआ था। यह गांव अटक दरिया से कुछ दूरी पर बसा हुआ है। बताते हैं कि इसके सौ द्वार होने के कारण इसका नाम 'सौदरा' प्रसिद्ध हो गया।

भाई घन्हईआ जी बचपन से ही परोपकारी एवं दयालु स्वभाव के स्वामी थे। वे अपने घर से जेब में कौड़ियाँ, पैसे, रुपए भर कर ले जाते थे और बाहर ज़रूरतमंद लोगों में बाँट देते थे। वे किसी का दुख-दर्द सहन नहीं कर सकते थे। गांव के बाहर मुख्य मार्ग के किनारे पहुंच जाते, यात्रियों का सामान (बोझ) अपने सिर पर उठाते, उन्हें ठिकाने पर पहुंचाकर उन्हें अपनी जेब में से रुपए-पैसे भी देते। ऐसा महान् व्यक्ति आज तक शायद ही किसी ने देखा हो, जो दूसरों का बोझा उठाकर गंतव्य तक भी पहुंचा दे तथा अपने पास से धन भी दे। धन्य हैं भाई घन्हईआ जी!

लोगों की सेवा करते-करते भाई घन्हईआ जी के मन में प्रभु-चरणों में लीन होने की इच्छा जागृत हो उठी। यही इच्छा बाद में श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण की भावना में परिवर्तित हो गई। किसी के

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर—१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०*

बताने पर वे लाहौर की ओर चल दिए। अभी वे लाहौर पहुंचे ही थे कि पिता जी के निधन का समाचार पहुंच गया। वे घर लौट आए। बड़े होने के नाते घर-परिवार का दायित्व संभाल लिया। शाही फौज को रसद-पानी पहुंचाने वाले पैतृक व्यवसाय में जुट गए। नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी का एक अनन्य सेवक भाई ननूआ औरंगज़ेब के काफिले में रहता था। उससे नवम् पातशाह जी द्वारा उच्चारित बाणी श्रवण की। हृदय पर चोट लगी। मन द्रवित व भक्तिमय हो उठा।

एक सिक्ख मिला। उससे 'गोबिंद' पाने की विधि पूछी। उसने श्री अनंदपुर साहिब का रास्ता बता दिया। वे संगत के साथ श्री अनंदपुर साहिब श्री गुरु तेग बहादर जी के पास पहुंच गए। उन्हें आया हुआ देख नवम् पातशाह जी ने पानी का घड़ा भर लाने का आदेश दिया। वे पानी का घड़ा भर लाए। गुरु जी ने थोड़े-से जल से अपने हाथ धोए। शेष जल बहा दिया। उन्हें औऱ जल लाने के लिए कहा। भाई घन्हईआ जी पुन: पानी का घड़ा भर लाए। गुरु जी ने थोड़े-से जल से अपने पैर धोए। शेष जल फिर बहा दिया। इस तरह गुरु जी द्वारा निरंतर तीन महीने तक उनकी सेवा-भावना व कर्त्तव्यनिष्ठा की परीक्षा ले जाती रही। भाई घन्हईआ जी 'सत्य वचन' कहकर खुशी-खुशी सेवा में लगे रहे। तीन माह के बाद गुरु जी ने अंतिम परीक्षा ली कि अगर आज पानी बहाने पर इस सेवक का मन व्यथित हुआ, तो यह भविष्य में सभी को एक समान समझ पानी नहीं पिलाएगा। परम सेवक भाई घन्हईआ जी इस परीक्षा में भी सफलता प्राप्त कर गए।

भाई घन्हईआ जी गुरु जी की, सिक्ख संगत की तथा गुरु-घर के घोड़ों की सेवा करते रहे। उनकी सेवा गुरु-घर में स्वीकृत हुई। प्रसन्न होकर गुरु जी ने फरमान किया— "अब यह दाति दूसरों में भी बांटिए!"

भाई घन्हईआ जी ने ज़िला अटक से लगभग बीस कोस दूर 'उरां कव्हे' गांव में धर्मशाला निर्मित की और गुरुओं की पवित्र बाणी के प्रचार का प्रवाह चलाया तथा आतिथ्य-सेवा जारी रखी। ११ नवंबर, सन् १६७५ ई. को श्री गुरु तेग बहादर जी को जालिम औरंगजेब के आदेश पर दिल्ली के चाँदनी चौक में शहीद कर दिया गया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरु-पिता की शहादत के बाद सभी सिक्खों को अपने पास बुलाया। भाई जी भी गुरु जी के पास पहुंच गए। गुरु जी के कहने पर वे पानी से मशकें भर-भरकर प्यासे लोगों की प्यास बुझाने में रत हो गए, प्यासी रूहों को तृप्त कर शांत करने लगे।

भाई घन्हईआ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास श्री पाउंटा साहिब पहुंच गए। वहां पर जब दुश्मन की सेनाओं के साथ युद्ध का सिलसिला चल पड़ा तब उन्होंने मैदान-ए-जंग में घायल सैनिकों को पानी पिलाने की अति कठिन सेवा का जिम्मा संभाल लिया। भाई घन्हईआ जी, जिन्हें विश्व के महान मानवतावादी, धर्म-निरपेक्ष सेवक,

आध्यात्मिक दार्शनिक कहा जाता है, वे युद्ध के मैदान में बिना भेदभाव के सभी घायल सैनिकों को पानी पिलाते थे। वे किसी को भी बेगाना नहीं समझते थे। उनकी दृष्टि एक सच्चे संत एवं परोपकारी आदमी की थी। केवल मीठी-मीठी उपदेशात्मिक बातें करने वाले तथाकथित दार्शनिकों व संतों में वे शामिल नहीं थे। प्राय: देखा गया है कि अनेक प्रवचनकर्ता स्वयं को 'बड़े संत' समझने का भ्रम पाले रखते हैं, एक सामाजिक जाल-सा बुने रहते हैं, धर्म एवं समाज-सेवा के नाम पर 'व्यापार' करते हैं। भाई घन्हईआ जी ऐसे आडंबरों से रहित थे।

एक बार के युद्ध के मैदान में सिक्ख योद्धाओं ने देखा कि भाई घन्हईआ जी उनके अलावा विरोधी सैनिकों को भी पानी पिला रहे हैं। कुछेक ने संदेह प्रकट किया कि शायद दुश्मनों ने इन्हें धन दिया होगा। सिक्खों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास भाई जी के विरुद्ध शिकायत की। गुरु जी ने भाई जी को बुलाकर पूछा, "आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?"

भाई घन्हईआ जी ने गुरु जी के समक्ष हाथ जोड़कर नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "मेरे सच्चे पातशाह! मैं किसी अपने या पराए को पानी नहीं पिलाता हूं। मैं तो प्रत्येक मनुष्य में भगवान की छवि देखता हूं।"

भाई घन्हईआ जी का उत्तर सुन कर गुरु जी ने उन्हें मरहम की डिबिया और पट्टी भी दे दी तथा आदेश दिया, "भाई घन्हईआ जी! आज से आप मरहम-पट्टी करने की सेवा भी संभाल लें! पानी पिलाने के साथ-साथ घायलों की मरहम-पट्टी भी किया करें!"

गुरु-घर और मानवता के सच्चे सेवक भाई घन्हईआ जी द्वारा रखी गई विश्व की अपनी तरह की प्रथम 'रेडक्रॉस संस्था' की नींव को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अशीष वचनों ने और अधिक मज़बूत कर दिया।

सन् १७०४ ई. में भाई जी 'उरां कव्हे' गांव में पुन: चले गए। यहां पर भाई सेवा राम जी उनके पास आ गए। भाई सेवा राम जी के शिष्य भाई अड्डण शाह जी बने।

परम ब्रह्मज्ञानी, महान परोपकारी, सेवा व भक्ति की मूर्ति भाई घन्हईआ जी गुरबाणी के रसिया थे, गुरबाणी का सम्मान करने वाले थे। १७१८ ई. में 'उरां कव्हे' गांव में श्वास त्यागने के अवसर पर एक स्तंभ के साथ पीठ टिकाए बैठे बाणी-कीर्तन श्रवण कर रहे थे। कीर्तन की समाप्ति पर भी जब उनकी समाधि न टूटी, तब संगत द्वारा आवाज़ लगाए तथा हिलाए जाने पर पता चला कि वे प्रभु-चरणों में विराजमान हो चुके हैं। परम पिता परमात्मा की ज्योति में एक परम ब्रह्मज्ञानी की ज्योति विलीन हो चुकी थी।

भाई घन्हईआ जी तो दशमेश पिता जी के अति प्रिय सिक्ख बन चुके थे। भाई घन्हईआ जी द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलकर प्रत्येक सिक्ख, गुरु का प्यारा सिक्ख बन सकता है।

मदमस्त हाथी को पछाड़ने वाले पराक्रमी योद्धा : भाई बचित्तर सिंह

*–डॉ. राजेन्द्र सिंह साहिल**

'सवा लाख से एक लड़ाने वाले' और 'चिड़ियों से बाज तुड़ाने वाले' दशमेश पिता की अमृत की दात और प्रेरणा ऐसी अनोखी थी कि उसने अनगिनत साधारण मनुष्यों को असाधारण योद्धा बना डाला। गुरु साहिब के आशीर्वाद ने कई-कई खानदानों और कई-कई पीढ़ियों में ऐसी अद्वितीय शक्ति भर दी कि वे निरन्तर मानवता-विरोधियों से लोहा लेते रहे।

गुरु-घर की सेवा के प्रति समर्पित परिवार

भाई बचित्तर सिंह एक गुरु-कृपा-पात्र खानदान से संबंधित थे। आप उस महान् विद्वान् और योद्धा भाई मनी सिंघ जी के पुत्र थे, जिन्होंने दशम पिता के आदेशानुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पुनर्संपादन किया था और बाद में समय आने पर बंद-बंद कटा कर शहादत दी थी।

वंश-परंपरा के अनुसार भाई बचित्तर सिंह के परिवार का संबंध छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ जा जुड़ता है। भाई मनी सिंघ जी के दादा (भाई बचित्तर सिंह के परदादा) भाई बलू राव छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समर्पित सिपहसालार थे। भाई बलू राव श्री अमृतसर साहिब की जंग में १६२८ ई. में शहीद हुए थे। भाई बलू राव के १२ पुत्र थे। इनमें से दूसरे नंबर पर थे— भाई माई दास। भाई माई दास के दो विवाह हुए थे। पहली पत्नी से सात एवं दूसरी पत्नी से पाँच पुत्र हुए। भाई मनी सिंघ जी पहली पत्नी के सात पुत्रों में से एक थे।

भाई मनी सिंघ जी के बड़े भ्राता भाई बचित्तर सिंघ के ताया भाई दिआला जी को नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी को शहीद करने से पहले उबलते हुए पानी की देग में बैठा कर शहीद किया गया था। यही नहीं, भाई मनी सिंघ जी के अन्य दस भाइयों के अलावा भाई उदै सिंघ, भाई बचित्तर सिंघ आदि पांचों पुत्र गुरु दशमेश की सेवा में समर्पित थे।

इस प्रकार भाई मनी सिंघ जी ने अपने भाइयों और पुत्रों सहित सिक्ख आदर्शों की रक्षा के लिए शहादत दी। ऐसे महान् शहीदों के खानदान में जन्म लिया था भाई बचित्तर सिंघ ने।

जन्म एवं बालपन : भाई बचित्तर सिंघ की माँ का नाम माता सीतो था। आपका जन्म ६ मई सन् १६६४ ई. को पधियाना में हुआ था। कुछ विद्वान आपका जन्म-स्थान आपके पुश्तैनी गाँव अलीपुर (जिला मुलतान) को मानते हैं। बचपन से ही गुरु

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

दशमेश पिता की छत्र-छाया में पालन-पोषण होने के कारण आप धैर्यवान और बहादुर सिक्ख बने।

सिंघ सजना : भाई बचित्तर सिंघ ने अपने चारों भाइयों— भाई उदै सिंघ, भाई अजब सिंघ, भाई अजायब सिंघ और भाई अनिक सिंघ के साथ सन् १६९९ की बैसाखी वाले दिन खालसा पंथ की सृजना के समय दशमेश पिता से अमृत छका और सिंघ सजे।

मदमस्त हाथी का मुंह मोड़ना : भाई बचित्तर सिंघ के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना किला लोहगढ़ के द्वार पर लड़ते हुए मदमस्त हाथी को पराजित करना है। घटना एक सितंबर, सन् १७०० ई. की है। बिलासपुर के राजा अजमेर चंद के नेतृत्व में पहाड़ी राजाओं ने श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। श्री अनंदपुर साहिब के विभिन्न किलों पर मात खाने के बाद हमलावरों ने किला लोहगढ़ को जीतने की एक विशेष योजना बनाई।

किले के मज़बूत द्वार को तोड़ने के लिए एक हाथी को जंगी पोशाक पहना कर शराब पिलाई गई। फिर मदमस्त हुए हाथी को किले के द्वार को तोड़ने के लिए भेजा गया। भाई बचित्तर सिंघ ने गुरु दशमेश पिता से मदमस्त हाथी का मुकाबला करने के लिए आज्ञा माँगी। गुरु साहिब ने भाई साहिब की पीठ थपथपाई और मदमस्त हाथी का मुकाबला करने के लिए अपना 'नागनी बरछा' दिया।

जब मदमस्त हाथी लोहगढ़ किले के द्वार की ओर बढ़ा तो भाई बचित्तर सिंघ ने सामने से आकर नागनी बरछे का भरपूर वार हाथी के मस्तक पर किया। नागनी बरछा लोहे के तवों से बने कवच को भेदता हुआ हाथी के माथे में घुस गया। भाई साहिब ने नागनी बरछा बाहर खींचा। दर्द से चिंघाड़ता हुआ हाथी अपनी ही सेना को रौंदता हुआ भाग खड़ा हुआ।

भाई बचित्तर सिंघ के इस महान कारनामे का वर्णन भाई संतोख सिंघ ने अपने ग्रंथ 'श्री गुर प्रताप सूरज' में बड़ी ही सुंदरता के साथ किया है। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'महान कोश' में इसे उद्धृत किया है :

तब विचित्र सिंघ रिदे विचारयो,
इह अवसर अब मेरा।
हतों मतंग अंग मै बरछा,
करकै ओज घनेरा ।
चरबत ओठन लाल बिलोचन,
फरकत मूछ उठाई।
भृकुटी चढी कुटिल मुख लाली,
समस महाँ छबि छाई।
पग को बल रकाब पर करकै,
उछरयो आसन छोरा।
सभ शरीर को ओज संभर कै,
हय फांधयो गज ओरा।
सैफ बचाइ चलाइ सु बरछा,
तवा फुलादी फोरा।

धसयो जाइ गज मस्तक में जब,
पुन कर जुग कर जोरा।
करयो धसावन प्रविसयो ऐसे,
उपमा कहों बनाई।
क्रौंच सैल मो जनु शिवनंदन,
बरछी मार धसाई।
वासुकि किधौं बेग कर दीरघ,
विनतासुत के त्रासा।
देख रंध्र गिरि विखै प्रवेसयो,
नहि पुन बदन निकासा।

इसी घटना का वर्णन करते हुए ज्ञानी गिआन सिंघ अपने ग्रंथ 'तवारीख गुरू ख़ालसा' में लिखते हैं :

"सूर्योदय होते ही पहाड़ी राजाओं ने मतवाले हाथी को मदिरा पिलाई, लोहे का कवच पहनाया, उसकी सूंड़ में चार हाथ लंबी तीखी तलवार थमाई, सिर पर लोहे के तवे बांध दिये और किले के द्वार की ओर सीधा कर दिया। पहाड़ी सेना पीछे चल पड़ी। हाथी की सजधज को देखकर सभी पहाड़ी राजाओं को विश्वास हो गया कि आज लोहगढ़ का किला अवश्य फ़तह हो जाएगा। जब सिक्खों ने गुरु जी को यह सारा हाल बताया, तो गुरु साहिब ने आदेश दिया, 'खालसा जी! चिंता न करें, अकाल पुरख अच्छा करेगा।' हमारा बचित्तर सिंघ, शत्रु के हाथी को मारकर भगा देगा।' ये वचन सुनकर भाई बचित्तर सिंघ ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, 'महाराज! यह सब आपकी कृपा है कि आप मुझे बढ़ाई दे रहे हैं। सारा कारज तो आपने स्वयं ही करना है। यदि आप कृपा करें, तो यह हाथी क्या मैं तो ऐरावत को भी बरछे में पिरो लाऊं।' गुरु जी बहुत प्रसन्न हुए और आशीर्वाद प्रदान कर भाई बचित्तर सिंघ को लालो-लाल कर दिया। उन्हें नागनी बरछा देकर उनकी पीठ थपथपाई। उन्हें घोड़े पर सवार कर जब गुरु जी ने खालसा सेना के साथ पहाड़ियों के हाथी को मारने के लिए भेजा, तब वे जोश से इतना भर गए कि उन्हें दुश्मन का हाथी भेड़ के समान दिखाई देने लगा। गुरु जी यह सब कौतुक देख रहे थे।"

"जब मतवाला हाथी किले के पास आया तो भाई बचित्तर सिंघ ने पूरे जोर के साथ नागनी बरछे से हाथी के माथे पर ऐसा प्रहार किया कि नागनी बरछा तवे में छेद कर हाथी के सिर में सीधा धंस गया। हाथी चिंघाड़ कर क्रोध से पीछे हटा तो महावत नीचे गिर पड़ा। हाथी ने पहाड़ियों की सेना पर ही धावा बोल दिया। तब उनमें भगदड़ मच गई। सैकड़ों मारे गये, सैकड़ों के हाथ-पैर टूट गये और सैकड़ों मारे डर के भाग खड़े हुए।"

जीवन के अंत तक दशमेश पिता की सेवा : भाई बचित्तर सिंघ जीवन भर दशम पिता की सेवा और कर्त्तव्यपरायणता में तत्पर रहे। भाई बचित्तर सिंघ ने श्री अनंदपुर साहिब की जंग सहित कई युद्धों में भाग लिया। दिसंबर १७०४ में, जब दशमेश पिता श्री अनंदपुर साहिब से निकले, तो भाई साहिब गुरु जी के साथ थे। भाई बचित्तर सिंघ

उन सिंघों में से एक थे जिन्होंने सरसा नदी की तेज़ धारा को सुरक्षित पार किया। रोपड़ की ओर से मुगल सैनिक पीछा कर रहे थे। मलिकपुर रंघड़ां के पास उनकी मुठभेड़ मुगल सैनिकों के एक समूह के साथ हुई, जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें मरणासन्न अवस्था में, साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी और भाई मदन सिंघ द्वारा कोटला निहंग ख़ान (रोपड़) स्थित भाई निहंग ख़ान के घर ले जाया गया। भाई निहंग ख़ान गुरु-घर के बड़े प्रेमी सिक्ख थे।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ ने भाई निहंग ख़ान से भाई बचित्तर सिंघ की देखभाल करने को कहा। इसके बाद गुरु साहिब शेष चालीस सिक्खों के साथ चमकौर साहिब की ओर चल पड़े। प्रस्थान से पहले, दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई निहंग ख़ान को एक तेग, एक खंजर और एक ढाल भेंट की। ये वस्तुएं आज भी गुरुद्वारा श्री भट्ठा साहिब, रोपड़ में शोभित हैं।

भाई बचित्तर सिंघ के भाई निहंग खान के घर में होने की बात छुपी नहीं रही। यह सुनकर कि भाई निहंग ख़ान सिक्खों को शरण दे रहा है, मुग़ल सैनिकों ने उसके घर की तलाशी ली। गंभीर रूप से घायल भाई बचित्तर सिंघ एक छोटे-से कमरे में लेटे हुए थे, जहां भाई निहंग ख़ान की बेटी बीबी मुमताज उनकी देखभाल कर रही थी। अपने नाम के अनुरूप, भाई निहंग ख़ान ने धैर्य बनाए रखा। खोजी दल ने जब उस कमरे में घुसने की कोशिश की तो भाई निहंग ख़ान ने कहा कि उस कमरे में उसका 'बीमार दामाद' लेटा है और उसकी बेटी अपने 'बीमार पति' की देखभाल कर रही है।

इस प्रकार ख़तरा तो टल गया, लेकिन भाई बचित्तर सिंघ की जान नहीं बच सकी। भाई साहिब ने २२ दिसंबर, १७०४ ई. के आसपास अपने ज़ख़्मों के कारण दम तोड़ दिया।

बीबी मुमताज की अटूट निष्ठा : जब भाई बचित्तर सिंघ, जो गंभीर रूप से घायल थे, बीबी मुमताज की देखरेख में एक छोटे-से कमरे में लेटे थे, तो बीबी मुमताज ने अपने पिता को यह कहते सुन लिया कि उनकी बेटी अपने 'बीमार पति' की देखभाल कर रही है, इसलिए उसी क्षण बीबी मुमताज ने भाई बचित्तर सिंघ को अपने पति के रूप में स्वीकार कर लिया। उनके निधन के बाद बीबी मुमताज ने सारा जीवन उनकी विधवा के रूप में व्यतीत किया। आजकल रोपड़ में 'यादगार बीबी मुमताज गुरुद्वारा साहिब' सुशोभित है।

'गुरुद्वारा श्री शहीदगंज साहिब भाई बचित्तर सिंघ' वह स्थान है जहां महान योद्धा भाई बचित्तर सिंघ का अंतिम संस्कार किया गया था। भाई बचित्तर सिंघ का नागनी बरछा तख्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब में सुरक्षित है।

रामकली सदु

*–डॉ. हरबंस सिंघ**

लफ़्ज़ 'सदु' पंजाबी भाषा में प्राय: इस्तेमाल किया जाता है। इसका अर्थ है— आवाज़, (पुकारना या बुलाना)। प्रो. साहिब सिंघ 'सदु' बाणी का टीका करने से पूर्व लिखते हैं कि रामकली राग में उच्चारण की गई इस बाणी का नाम 'सदु' है। यहाँ इसका तात्पर्य है— "ईश्वर द्वारा श्री गुरु अमरदास जी को आया हुआ न्यौता।" इससे अभिप्राय है कि यह बाणी, इतिहास की एक बहुत बड़ी घटना को कम शब्दों में बयान करने वाला बहुमूल्य दस्तावेज़ है, जिसमें से ऐतिहासिक महत्त्व वाली दो-तीन बातें हमारे सामने प्रकट होती हैं।

'सदु' बाणी में सांकेतिक रूप से बयान की गई घटनाओं की जानकारी हमें किसी अन्य समकालीन रचना में से नहीं मिलती। पहली बात, श्री गुरु अमरदास जी के अंतिम समय में श्री गोइंदवाल साहिब में संगत तथा बिरादरी का एकत्र होना और श्री गुरु अमरदास जी के द्वारा दिया गया आख़िरी उपदेश, जिसमें अंकित 'अंतिम समय की मर्यादा' दर्ज है। सिक्ख धर्म के अनुयाइयों के लिए यह बाणी अंतिम संस्कार का स्थाई अंग बन गई है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि श्री गुरु अमरदास जी ने ज्योति-जोत समाने से कुछ समय पूर्व गुरगद्दी श्री गुरु रामदास जी को प्रदान की तो कुछ लोग, जिनमें बाबा मोहरी जी भी शामिल थे, गुरु जी के इस फ़ैसले को मानने को तैयार नहीं थे। श्री गुरु अमरदास जी की शख़्सियत का प्रभाव कुछ इस तरह का था कि उन्होंने सभी विवादों को ख़त्म कर संगत और बिरादरी एवं पुत्र बाबा मोहरी जी को श्री गुरु रामदास जी के हुक्माधीन कर दिया। अभिवादन करने वालों में से सर्वप्रथम बाबा मोहरी जी ही थे। फिर बाकी सारी संगत और बिरादरी ने भी श्री गुरु अमरदास जी के हुक्म (गुरु जी की रज़ा, गुरु जी के फ़ैसले) के समक्ष सिर झुका दिया :

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ॥

मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ॥

सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ॥

**3-C/38, 2nd Floor, New Rohtak Road, Karol Bagh, New Delhi-110005*

कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२४)

अगर इतिहास के पन्नों को देखें तो प्रत्येक गुरु साहिब अपने ज्योति-जोत समाने से पूर्व यह निश्चित कर जाते रहे कि उनके पश्चात सिक्ख पंथ का नेतृत्व कौन करेगा। बेशक वह व्यक्ति ही गुरु-पदवी के लिए चुना जाता रहा जो इसके योग्य होता था, लेकिन फिर भी बिरादरी के कुछ सदस्य और कुछ गुरु-पुत्रों द्वारा विद्रोह की आवाज़ उठाई जाती रही। श्री गुरु अमरदास जी ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व गुरगद्दी की ज़िम्मेदारी (सेवा) श्री गुरु रामदास जी को सौंप कर किसी भी उठने वाले विवाद से मुक्त एक महान कार्य पूरा किया। 'सदु' बाणी की पाँचवीं पउड़ी में बाबा सुंदर जी फरमान करते हैं :

रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२३)

इस घटना को भट्ट साहिबान ने अपनी बाणी में इस प्रकार बयान किया है :

नानकि नामु निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई॥

ता ते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई॥

गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई॥

सोढी स्रिस्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४०६)

भाई गुरदास जी अपनी बीसवीं वार की पहली पउड़ी में लिखते हैं :

सतिगुर नानक देउ आपु उपाइआ।

गुर अंगदु गुरसिखु बबाणे आइआ।

गुरसिखु है गुर अमरु सतिगुर भाइआ।

रामदासु गुरसिखु गुरु सदवाइआ।

श्री गुरु रामदास जी ने अपने गुरगद्दी-काल (१५७४-१५८१ ई.) में न केवल सिक्ख पंथ को सुदृढ़ किया, बल्कि 'चक्क रामदास' की आधारशिला रख कर एक ऐसे नगर की बख़्शिश की जो सिक्ख धर्म का शिरोमणि और केंद्रीय स्थान बन गया। 'अमृत सरोवर' की खुदाई और स्थापि के बाद यह नया नगर 'अमृतसर' नाम से प्रसिद्ध हुआ। श्री गुरु रामदास जी ने ३० रागों में बाणी उच्चारण की और अपने से पूर्व गुरु साहिबान एवं भक्त साहिबान की बाणी को संभाला भी। श्री गुरु रामदास जी ने अपने अनुयाइयों के लिए आदर्श मर्यादा कायम की :

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि

हरि नामु धिआवै॥

उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अंम्रित सरि नावै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३०५)

'रामकली सदु' की पहली पउड़ी में बाणीकार बाबा सुंदर जी ने पहली ही पंक्ति में अकाल पुरख को सभी जीवों पर रहमत करने वाला कह कर श्री गुरु अमरदास जी के प्रति बयान करना शुरू कर दिया है जो सदा प्रभु-नाम में लीन रहते हैं। उन्होंने श्री गुरु नानक साहिब और श्री गुरु अंगद देव जी की कृपा द्वारा उच्च दर्जा प्राप्त कर लिया है। आप अडिग अवस्था प्राप्त कर चुके हैं। आप सदा अकाल पुरख में लीन रहे हैं और अकाल पुरख के अलावा किसी अन्य को उस जैसा नहीं मानते :

अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे॥

परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२३)

(जो श्री गुरु अमरदास जी) अकाल पुरख के नाम में सदा लीन रहते थे (अब प्रभु-घर से) उनके चलने का न्यौता आ गया है। श्री गुरु अमरदास जी ने जगत में (रहते हुए अमर, अटल, अचल) परमात्मा को भक्ति के माध्यम से प्राप्त कर लिया है। दूसरी पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा अकाल पुरख के चरणों में की गई अरदास (विनती) का वर्णन है कि हे अकाल पुरख! मेरा मान रखना। अकाल पुरख ने श्री गुरु अमरदास जी की अरदास सुन ली और अपने चरणों के साथ जोड़ लिया। उन्हें शाबाश देकर कहा कि तू धन्य है! तू धन्य है!

सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ॥

पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो॥

अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो॥

सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ॥

हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२३)

दूसरी पउड़ी में बाबा सुंदर जी के कहने का तात्पर्य है कि गुरु जी का जीवन सफल हुआ है।

तीसरी पउड़ी में वर्णन है कि श्री गुरु अमरदास जी को अकाल पुरख का यह आदेश (रज़ा) अच्छा लगा है। वे अपने सिक्खों एवं संगत को संबोधित होकर कह रहे हैं— "आप मेरे पुत्र हो! मेरे भाई और मेरा परिवार हो! आप मन में अनुमान लगा कर देखो कि भाग्य में लिखा हुआ हुक्म (कभी) टल नहीं सकता।

(इसलिए अब) मैं अकाल पुरख के पास जा रहा हूं :

धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२३)

इस पउड़ी से सहज ही यह अनुमान लग सकता है कि जीवन के आखिरी समय में श्री गुरु अमरदास जी शांत व स्थिरावस्था में थे। संगत उन्हें कितना प्रेम करती होगी और वे भी संगत को कितना प्रेम करते होंगे कि आप उन्हें पुत्र, भ्राता, परिवार आदि जैसे शब्दों के साथ संबोधित कर रहे हैं। यह प्रेम ही संगत को भौंरे की भांति उनके चरणों में ले आता था।

चौथी पउड़ी में बाबा सुंदर जी कहते हैं कि अंतिम समय निकट आया जान कर श्री गुरु अमरदास जी ने अपने परिवार को अपने पास बुलाया और उन्हें हिदायत की कि उनके शरीरांत के बाद किसी ने रोना या (विलाप) नहीं करना, क्योंकि मुझे यह सब अच्छा नहीं लगेगा :

मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ॥
मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए॥
तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए॥
सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ॥
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ॥४॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२३)

उन्होंने यह भी कहा कि अगर किसी इंसान के मित्र की प्रशंसा होती है या उसे मान मिलता है तो उसका मित्र भी ख़ुश होता है। हमें भी इस बात से प्रसन्न होना चाहिए कि अकाल पुरख हमें आदर दे रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से चौथी पउड़ी बहुत महत्व रखती है, क्योंकि पउड़ी की अंतिम दो पंक्तियों में श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी दिए जाने का वर्णन है। श्री गुरु अमरदास जी ने सारी सिक्ख संगत और निकटवर्तियों को उनके अधीन कर दिया था। गुरगद्दी के प्रश्न को लेकर यह परिवर्तन स्वाभाविक ही संभव हो गया। यह श्री गुरु अमरदास जी के जीवन का आख़िरी महान उपकार था।

'सदु' बाणी की पाँचवी पउड़ी में मानव के अकाल प्रस्थान कर जाने के बाद प्रचलित उस मर्यादा का वर्णन किया गया है जो गुरसिक्खों के लिए वर्जित है। जैसे-जैसे सिक्ख धर्म आगे बढ़ता चला गया, कुछ रीति-रिवाज और कुछ कायदे-कानून पक्के तौर पर सिक्ख मर्यादा का अंग बनते चले गए। यह प्रक्रिया श्री गुरु नानक

साहिब के समय से ही शुरू हो गई थी। बाणी की इस पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा दिए गए आदेश बड़े स्पष्ट हैं कि प्राणी के अकाल प्रस्थान कर जाने के बाद गुरसिक्खों ने क्या करना है और क्या नहीं करना।

'सदु' बाणी के अनुसार संसार के प्राणियों को कीर्तन की मर्यादा को अपनाने का उपदेश है। बुज़ुर्ग प्राणी के निधन के बाद बेबाणु आदि निकालना बेकार क्रिया है। अकाल पुरख की याद, उसका नाम और कीर्तन ही सच्ची क्रिया है जो गुरु साहिबान ने अपने सिक्खों के लिए निर्धारित की है। 'सदु' बाणी की इस पउड़ी की अपनी विशेष ऐतिहासिक महत्ता है, क्योंकि इसी पउड़ी की अगली पंक्तियों में श्री गुरु रामदास जी को गुरगद्दी देने का वर्णन है। छठी पउड़ी में सिक्ख संगत, पुत्रों और अपने भाईचारे को प्रेरित कर उन्हें श्री गुरु रामदास जी के चरणों के संग जोड़ने का विस्तार है।

जहाँ यह बाणी श्री गुरु अमरदास जी के अकाल प्रस्थान करने के हालात को बयान करता एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, वहाँ श्री गुरु रामदास जी को गुरुतागद्दी दिए जाने का भी एक प्रमुख स्रोत है कि कैसे विरोध भरे हालात पैदा होने से पहले ही श्री गुरु अमरदास जी ने सभी सिक्ख भाईचारे को श्री गुरु रामदास जी के नेतृत्व में संगठित कर दिया था :

हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ॥

रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ॥

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ॥

मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ॥

सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ॥

कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ॥

हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ॥

कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२४)

जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार॥

–डॉ. श्याम सुंदर दीप्ति*

खान-पान को हमारी ज़िंदगी में बहुत महत्व दिया गया है। शिक्षित या अशिक्षित, अमीर या ग़रीब, किसी से भी साधारण से साधारण भाषा में बात करें कि खाने की क्या ज़रूरत है, तो सबका एक ही जवाब होगा कि भूख लगती है। अब यही सवाल दूसरे शब्दों में पूछा जाये कि अगर कोई आदमी कुछ समय न खाए तो उसे क्या महसूस होगा? इस सवाल का जवाब तकरीबन एक-सा ही होगा कि कमज़ोरी महसूस होती है। इसका मतलब यह समझा जा सकता है कि ख़ुराक हमें जिंदा रखने के लिए या कोई कार्य करने के लिए ताकत प्रदान करती है।

अब गुरबाणी के वाक्य को सही अर्थों में समझा जा सकता है कि वो खान-पान, जो हमारे शरीर को कष्ट प्रदान करता है और मन को दुखी करता है, वह किसके लिए और क्यों? मानव जीवन के इतिहास में यदि मानव के निरंतर विकास को उसके चौगिर्दे के साथ जोड़ कर देखें तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वनस्पति की पैदावार जीवों से पहले हुई है। यदि बड़े परिप्रेक्ष्य में समझें तो विज्ञान जीवों और वनस्पति की गणना जीवित श्रेणी में करता है। यह बात बताने की ज़रूरत तो पड़ रही है कि खान-पान को लेकर हमने ख़ुराक को शाकाहारी और मांसाहारी दो श्रेणियों में बाँटा हुआ है। यह विभाजन प्राकृतिक नहीं है। यह सामाजिक नज़रिया है, जो कि बाद में विकसित हुआ है।

ख़ुराक, समाज और कुदरत का आपस में पक्का रिश्ता है। शुरूआती विकास से वर्तमान के जीवों और कुदरत के संबंधों को विकसित होता देखें व समझें कि मनुष्य ने उत्पत्ति के समय से अपना चौगिर्दा खुद नहीं बनाया बल्कि कुदरत ने मनुष्य के मुताबिक ख़ुद तैयार किया है, जैसे बच्चे के जन्म से पहले स्त्री में बच्चे के विकास के मुताबिक ख़ुराकी तत्वों को पैदा होना, बच्चे की तैयारी का संकेत होता है।

यह बात गुरबाणी की ख़ूबसूरती है कि जहाँ वह खान-पान को शरीर के विकास और

*९७, गुरु नानक एवेन्यू, मजीठा रोड, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१, फोन : ९८१५८-०८५०६

बिगाड़ दोनों के साथ जोड़ती है, वहाँ ख़ुराक के साथ जुड़े विकारों की बात भी करती है। हमारी संस्कृति में तीन प्रकार की ख़ुराक का ज़िक्र किया जाता है और उसका प्रचार भी होता है, वो है— सात्विक, राजसिक और तामसिक। इसमें से सात्विक को सबसे बढ़िया और तामसिक को सबसे घटिया ख़ुराक माना गया है। गुरबाणी ख़ुराक का एक ही पक्ष सही ढंग के साथ वर्णन करती है कि फ़ालतू खाना शरीर को नुकसान पहुंचाता है, जो कि सबकी समझ में आने वाला है। वैज्ञानिक नज़रिए से ज़रूरत से ज्यादा कुछ भी खाया जाये तो वह शरीर और मन दोनों को परेशान करता है।

ख़ुराक, जो भूख दूर करती है और कमज़ोरी को घटाती है तथा पूरे खुराकी तत्वों के साथ शरीर का संतुलित विकास करती है, वह पेट भर जाने पर ख़ुशी भी देती है। दूसरे शब्दों में, आवश्यकता से अधिक ख़ुराक मन को तो परेशान करती ही है साथ में शरीर में अनेक विकारों को भी जन्म देती है। ख़ुराक को लेकर, इसकी कमी को लेकर ग़रीब लोगों में कुपोषण की बात होती है। फ़ालतू ख़ुराक के साथ ख़ास तौर पर स्वादिष्ट भोजन को लेकर, किसी के शरीर के वजन में विस्तार आदि को देखकर किसी को सम्पन्न घर का समझना अब अच्छा नहीं समझा जाता।

ख़ुराक के साथ जुड़े फ़ालतू खान-पान का बीमारियों की एक लम्बी सूची के साथ जुड़ना लगभग सभी को समझ आ रहा है। फ़ालतू खाना और खाने का हज़म न होना एक आम शिकायत है। इसके लिए पेट के तेज़ाब के लिए इस्तेमाल की जाती एंटासिड गोलियां या कैपसूल हमें दवा की हरेक पर्ची में लिखे मिलेंगे। एक सर्वेक्षण के मुताबिक दुनिया में इन दवाओं को सबसे अधिक बिकने का गौरव प्राप्त है। इसके अलावा मोटापे के साथ जुड़ी अनेक बीमारियों में से शुगर और दिल की बीमारियाँ, जैसे कैलस्टरोल का बढ़ना, हार्ट अटैक, जिगर का फैटी होना और जोड़ों का दर्द व पित्ते की पथरी गिने जा सकते हैं।

गुरबाणी में भक्त शेख फ़रीद जी के बोल भी इस तरफ कुछ-कुछ इशारा करते हुए सचेत करते हैं : *"जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख॥"*

गुरमति में मानव सहभागिता की स्वर्णिम अवधारणा

–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

श्री गुरु नानक साहिब ने सृष्टि रचना की व्याख्या करते हुए कहा कि परमात्मा की आज्ञा और इच्छा से ही समस्त सृजन और विनाश हो रहा है। उसकी आज्ञा के अनुसार ही किसी को श्रेष्ठता एवं निकृष्टता प्राप्त होती है और सुख-दुख मिलते हैं। गुरु साहिब ने इसे असमानता के रूप में नहीं परमात्मा की व्यवस्था के रूप में देखा और कहा कि सारा संसार उसकी आज्ञा में आबद्ध है। संसार में जिसे भी जो कुछ प्राप्त हुआ है उसमें उसकी योग्यता अथवा सामर्थ्य की कोई भूमिका नहीं है क्योंकि उसे जो भी प्राप्त हुआ है वह परमात्मा ने दिया है— "सभना जीआ का इकु दाता . . . ॥" वह सभी का दाता है। वह एकमात्र दाता है और सभी उसके सामने भिक्षुक बन कर खड़े हैं। सभी का भिक्षुक होना परस्पर समानता का एक ऐसा आधार है जिसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि मनुष्य पूर्ण रूप से परमात्मा पर आश्रित है :

कहिआ करणा दिता लैणा ॥
गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥
सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे
तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८)

प्राय: मनुष्य को अपने किए पर अभिमान होता है। इस अहंकार में वह अन्य को तुच्छ समझने लगता है। उसे जो उपलब्धियां प्राप्त होती हैं उनका श्रेय भी वह स्वयं को देता है और स्वयं को अन्य से श्रेष्ठ मानने लगता है। उसके इस अहंकार से ही परस्पर विभेद और असमानता जन्म लेती है। समाज में असमानता की भावना सबसे बड़ा अभिशाप है जिसने दुख और संताप उत्पन्न किये हैं। मनुष्य जीवन में वही करता है जो परमात्मा उससे कराता है। परमात्मा की इच्छा और हुक्म के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता। उसे वही प्राप्त होता है जो परमात्मा देता है। परमात्मा के हुक्म और इच्छा के बिना उसे कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। वह अपने आप में दीन है। उसका मान परमात्मा की कृपा में है। मनुष्य को सर्वाधिक अहंकार अपनी बुद्धि पर होता है। संसार में कदाचित कोई होगा जो स्वयं को बुद्धिमान न समझता हो। मनुष्य अहंकारवश स्वयं को तो बुद्धिमान समझता ही है, अन्य को मूर्ख भी

*ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९

समझता है। इससे वह स्वयं को अन्य से अलग कर लेता है और भेदभाव भरा व्यवहार करता है। श्री गुरु अरजन साहिब ने इस भ्रम का भी खंडन किया है :

ना को मूरखु ना को सिआणा ॥
वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥
अगम अगोचर बेअंत अथाहा
तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९८)

कोई मूर्ख नहीं है और कोई बुद्धिमान नहीं है। परमात्मा ने जिसको जैसा बनाया है वह वैसा ही है। यह परमात्मा की रची हुई व्यवस्था है जिसे वही जानता है। मनुष्य इसका रहस्य नहीं समझ सकता। परमात्मा की व्यवस्था का आधार अनंत, अगम्य और दृष्टि से परे है। उसका मूल्यांकन कर पाना मनुष्य के वश में नहीं है। इसलिये, परमात्मा की व्यवस्था पर प्रश्न उठाने का भी उसे अधिकार नहीं है। कौन मूर्ख है, कौन बुद्धिमान है, यह परमात्मा ही जान सकता है। मनुष्य इसे निश्चित नहीं कर सकता। वह कैसे किसी को बुद्धिमान अथवा मूर्ख कह सकता है? इसका स्पष्ट अर्थ हुआ कि मनुष्य कोई भेदभाव नहीं कर सकता और न किसी का तिरस्कार कर सकता है। ऐसा करना परमात्मा की व्यवस्था और नियोजन के विरुद्ध होगा। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि जैसा मूर्ख है वैसा ही विद्वान है :

ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥
सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥१ ॥
बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥
तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०१५)

मनुष्य न किसी को ज्ञानी समझे, न अज्ञानी। कोई मनुष्य कैसा है, यह जानने में समय तथा ऊर्जा नष्ट करने के स्थान पर वह परमात्मा की भक्ति करे, मन उसकी भावना में एकाग्र करे। यदि कोई अज्ञानी है तो वास्तव में वह स्वयं है, क्योंकि अभी तक उसे परमात्मा की शरण नहीं प्राप्त हुई है। अपने को अज्ञानी समझ कर परमात्मा की महिमा के दर्शन करे तो उसे विस्मय होगा कि एक परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। वही सृष्टि का संचालन कर रहा है। वही एकमात्र दाता है और दयालु है, जिसकी दया होगी तो जीवन का उद्धार हो जायेगा। यदि प्रत्येक मनुष्य इस सत्य को हृदय से धारण कर ले तो समाज में समरसता व्याप्त हो जायेगी तथा परस्पर प्रेम की अवस्था बनेगी। जो भेदभाव मनुष्य ने बनाये हुए हैं वे निरर्थक हैं। इनसे समाज में शोषण और अन्याय की प्रवृत्ति जन्म लेती है। श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि "मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ॥", सभी एक ज्योति से ही उत्पन्न हुए हैं। उनके रूप, रंग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु उद्गम-प्रक्रिया में

कोई अंतर नहीं है। वे एक ही पिता की संतान हैं। भक्त कबीर जी ने परमात्मा को कुम्हार और जीवों को उसके बनाये मिट्टी के बर्तनों से उपमा दी है :

माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै॥
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३५०)

परमात्मा ने एक कुम्हार की तरह जीव रचे हैं। जैसे कुम्हार एक बार मिट्टी गूंथता है और उसी मिट्टी से, उसी चाक पर, उसी विधि से भिन्न-भिन्न आकार के बर्तन तैयार कर लेता है, परमात्मा ने भी वैसे ही पांच तत्वों— जल, वायु, अग्नि, धरती और आकाश से मानव-तन रचा है। कोई भी ऐसा नहीं है जिसमें ये तत्व न हों। सभी को समान अंग दिये हैं। सभी के तन एक समान प्रक्रिया से गतिशील होते हैं। भक्त कबीर जी ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात कही है कि परमात्मा एक कुशल रचनाकार है। न तो उसके अंदर कोई त्रुटि है और न उसकी रचना में कोई भूल हो सकती है।

विडंबना यह है कि मनुष्य इस सत्य को जानता तो है किन्तु स्वीकार नहीं करता। संसार में व्याप्त माया का प्रभाव इतना गहरा है कि उसका मन भटकता रहता है और एक सत्य पर टिक नहीं पाता। वह ऐसा जीवन जीता है मानो उसे संसार से कभी जाना ही नहीं है। धन, दौलत, शोहरत, बल, सत्ता संचित करने में वह दिन-रात एक कर देता है। परमात्मा और उसकी व्यवस्था को वह विस्मृत कर देता है और दुख भोगता है।

मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालि॥
गढ़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९३६)

श्री गुरु नानक साहिब ने सचेत किया है कि मन यदि तृष्णा और लालसा में लिप्त होकर परमात्मा को भुला दे और अपने स्वार्थों की पूर्ति में लग जाये तो इसका फल दुख और संताप के रूप में ही प्राप्त होता है। उस समय न धन, न सम्पत्ति काम आती है और न सत्ता, न बल साथ देता है। गुरु साहिब ने कहा कि यह सब जो उसने जीवन लगा कर एकत्र किया है, मदारी के तमाशे की तरह है। माया मदारी की तरह मनुष्य को नचाती है तो भारी भीड़ एकत्र हो जाती है। मदारी का खेल ख़त्म होना ही होता है। जैसे ही खेल खत्म होता है, भीड़ अदृश्य हो जाती है। वहां कोई नहीं रुकता। सत्य यह है कि "माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि॥" माया कभी किसी की संगी नहीं हुई है। श्री गुरु नानक साहिब ने मनुष्य को परमात्मा के साथ जोड़ा और उसे जीवन का सदुपयोग करने की प्रेरणा दी। जीवन की सार्थकता समाज, संसार में रह कर ईमानदारी से किरत करने और सद्गुण धारण करने में है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२४५)

मनुष्य निष्ठा से श्रम करे, अपनी आजीविका अर्जित करे। श्री गुरु नानक साहिब ने धर्म प्रचार-यात्राओं के पश्चात करतारपुर साहिब को अपना स्थायी निवास बनाया तो जीविका के लिये कृषि का व्यवसाय चुना। गुरु साहिब प्रात: ध्यान, आराधना के पश्चात अपने खेतों में जाते थे और कृषि-कार्य किया करते थे। गुरु साहिब के पास जितने खेत थे उनमें से एक हिस्सा उन्होंने संगत के लिये छोड़ रखा था। उन खेतों की उपज और आय से, आने वाली संगत के लंगर आदि का प्रबंध किया जाता था। किशोरावस्था में भी जब उन्हें व्यापार का मौका मिला तो पिता महिता कलियाण दास से मिला सारा धन उन्होंने भूखे, अभावग्रस्त 'साधुओं' के भोजन और वस्त्रों में व्यय कर दिया था। परमात्मा की व्यवस्था ऐसी ही है। जो परमात्मा की इस इच्छा को पहचान लेता है वह स्वहित के समान परहित की भी चिंता करता है।

गुरु साहिबान ने सदैव परहित की बात की। एक बार हिन्दुस्तान के बादशाह अकबर ने श्री गुरु अमरदास साहिब से मिलने की इच्छा व्यक्त की। श्री गुरु अमरदास साहिब ने स्वयं न जाकर भाई जेठा जी, जो बाद में श्री गुरु रामदास साहिब के रूप में गुरु-पद पर विराजमान हुए, को लाहौर भेजा। अकबर ने उनसे धर्म, आध्यात्म और सिक्ख पंथ पर कई प्रश्न किये। सभी प्रश्नों का उत्तर श्री गुरु रामदास जी ने अति स्पष्टता और विद्वता से दिया। अकबर श्री गुरु रामदास साहिब के ज्ञान से अत्यंत प्रभावित हुआ और उसने गुरु साहिब से कुछ मांगने को कहा। श्री गुरु रामदास साहिब ने अपने लिये कुछ न मांग कर हिन्दुओं पर लगाये एक विशेष कर को माफ़ कर देने के लिये कहा। अकबर तुरंत मान गया और कर न लेने का हुक्म जारी कर दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा सजाया और सिक्खों में वीरता का भाव पैदा किया। खालसा की वीरता आज तक शक्ति के संचय से अधिक परहित हेतु शक्ति के उपयोग पर व्यय हुई है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का हुक्म था कि प्रत्येक सिक्ख अपने घर लंगर चलाये और ऐसी व्यवस्था रखे कि जब भी कभी कोई याचक आ पहुंचे, उसे पर्याप्त भोजन उपलब्ध हो सके। सिक्खों के पास बल था तो उन्होंने अहमद शाह दुर्रानी द्वारा बंदी बना कर काबुल ले जाई जा रही बाईस हजार हिन्दू स्त्रियों को छुड़वा लिया था और ससम्मान उनके घर तक पहुंचाया था। यह है "घालि खाइ किछु हथहु देइ" की भावना जो सिक्खों में सदैव जीवंत रही है। अभी तक परहित को उपकार के रूप में देखा जा रहा था। उपकार करने वालों की रुचि होती है कि उन्हें परोपकारी के रूप में पहचान मिले। यह परोपकार धन, पदार्थ के दान अथवा अन्य भौतिक सहायता तक सीमित था। परोपकार की भावना ने अहंकार को

जन्म दिया। परोपकार अपने अहं की तुष्टि के लिये किया जाता था। गुरु साहिबान ने परहित को व्यापक अर्थ दिये। गुरसिक्ख के लिये यह धर्म और भक्ति का अंग बनकर एक सिक्ख के नाते सहभागिता का कर्म बन गया, जब इसमें आध्यात्मिक उन्नयन में सहभागिता को भी शामिल कर लिया गया। श्री गुरु नानक साहिब ने इसे 'अध्यात्म कर्म' की संज्ञा दी है :

ऐसे जन विरले संसारे॥
गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे॥
आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १०३९)

गुरसिक्ख अपने गुरु के ज्ञान, उपदेशों को भली-भांति समझ कर उनके मर्म को ग्रहण करता है और उनका पालन करता है। ऐसा करते हुए वह उत्तम अवस्था को प्राप्त हो जाता है और अवगुणों से उबर जाता है। अपनी इस श्रेष्ट अवस्था का उपयोग वह मात्र अपने उद्धार के निमित्त नहीं करता है, वह अपने सभी संगियों, निकटवर्तियों, आस-पास वालों के उद्धार का भी प्रेरक बनता है, उन्हें आत्मिक उन्नयन में सहयोग करता है। अपने साथ ही अन्य के जीवन के उद्धार का कारण बनने वाले का ही जीवन सफल है। संसार में प्रचलन था कि जो ज्ञान अर्जित कर लेता था वह अपने शिष्यों-अनुयाइयों को उतना ही ज्ञान बांटता था जितना वह आवश्यक समझता था। गुरु साहिबान ने अपने अनुयाइयों को अपने जैसा ही बनाया। अपना सम्पूर्ण ज्ञान उन्हें अपनी बाणी के माध्यम से सौंप दिया। गुरु और सिक्ख समतल पर आ खड़े हुए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने ही सजाये हुए पांच प्यारों से स्वयं भी अमृतपान कर 'आपे गुरु चेला' के विचार को प्रमाणिकता प्रदान की। यदि गुरु तारणहार है तो सिक्ख भी गुरु के ज्ञान का मर्म धारण कर अन्य का उद्धार कर सकता है। इससे बड़ी सहभागिता और क्या हो सकती थी! पंचम पातशाह के कथनानुसार :

आपि जपहु अवरा नामु जपावहु॥
सुनत कहत रहत गति पावहु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २८९)

गुरसिक्ख ज्ञान के सागर 'गुरबाणी' को सुनता है, ग्रहण करता है। वह अन्य को भी गुरबाणी सुनाता है और उन्हें ज्ञान धारण करने की प्रेरणा देता है। ज्ञान उसके आचार का अंग बनता है। ऐसा ही वह अन्य को करने के लिये भी प्रेरित करता है। परमात्मा का नाम वह स्वयं जपता है और अन्य भी उसकी प्रेरणा से नाम जपते हैं। ऐसा करने से सबका उद्धार होता है। मनुष्य का स्वयं तक सीमित न रह कर, सहभागिता के सूत्र को अपनाते हुए, सम्पूर्ण मानवता को अपना अंग बना लेना ही श्रेष्ठ आत्मिक अवस्था है।

अठारहवीं सदी की सिक्ख युद्ध-कला और युद्ध-कौशल

–डॉ. बलवंत सिंघ*

सिक्ख पंथ की युद्ध-कला और युद्ध-कौशल सिक्ख गुरु साहिबान के आध्यात्मिक चिंतन एवं व्यवहारिक अनुभव पर आधारित था। बाबर द्वारा भारत पर आक्रमण के समय श्री गुरु नानक देव जी के प्रतिक्रम से स्पष्ट है कि गुरु साहिब ख़ून-खराबे और जंग को पसंद नहीं करते थे। बेशक वे समाज में अमन-शान्ति, प्रेम-प्यार और सद्भावना के समर्थक थे, परन्तु इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि वे बुराई की ताकतों के साथ समझौतावादी रुचि के अधीन जब्र, ज़ुल्म, अत्याचार और नाइंसाफी को चुपचाप सहन करने की शिक्षा देते थे। वे मानव को आत्मसमान और आत्माभिमान के साथ जीवन बसर करने का सबक देते थे। इस मकसद के लिए वे बुराई के साथ समझौता नहीं बल्कि संघर्ष करने के मुद्दई थे। उन्होंने हाकिम श्रेणी द्वारा प्रजा पर किये जा रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ भी बुलंद की और समाज के कल्याण व मानव जीवन-मूल्यों की रक्षा हेतु अपना आप कुर्बान करने को जायज भी ठहराया। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के पश्चात् श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जब सिक्ख पंथ को सैनिक शक्ति में संगठित किया तो इसका मुख्य उद्देश्य 'शस्त्र रखिआ, जरवाणे दी भखिआ' निश्चित किया था। आत्म-रक्षा के लिए और राजनैतिक माहौल में भाई गुरदास जी ने स्पष्ट किया कि हमेशा के लिए अहिंसावादी पहुँच मानव व समाज के लिए कल्याणकारी नहीं होती। भारतीय समाज के जात-पांत पर आधारित विभाजन के साथ सिपाहियाना पेशामात्र क्षत्रियों का ही एकाधिकार था। सिक्ख चिंतन किसी ख़ास जाति या नसल को ऐसे अधिकार नहीं सौंपता। यहाँ देश-कौम की रक्षा के लिए सभी जन एक ही जैसे भागीदार हैं। ख़ालसा की स्थापना के उपरांत शस्त्र धारण करना सिक्ख रहित (आचरण) का एक अभिन्न अंग बन गया। दूसरे शब्दों में, आत्म-रक्षा और पंथक हितों के लिए सैनिक शक्ति के प्रयोग को धार्मिक तौर पर जायज़करारी मिल गई। इस प्रकार मानवता और समाज की भलाई हेतु या दूसरे शब्दों में, हमलावरों के विरुद्ध सैनिक संघर्ष में शामिल होने के लिए सिक्खों पर धार्मिक पाबंदी नहीं थी। इसी लिए सिक्ख धर्म भक्ति और शक्ति, शस्त्र और शास्त्र तथा संत और सिपाही की रिवायतों के मध्य संयोग के लिए प्रसिद्ध है। अमन और जंग, दोनों में चाहे कैसी भी स्थिति हो, सिक्ख पंथ का संत-सिपाही अपने उच्च धार्मिक और नैतिक जीवन-मूल्यों को कभी दरकिनार नहीं करता।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी गवाह है कि श्री गुरु नानक देव जी मुग़ल सैनिकों द्वारा प्रजा के साथ किए जा रहे अमानवीय व्यवहार पर बहुत व्याकुल थे। उनके अनुसार किसी सैनिक का विरोधी सैनिक

*भूतपूर्व डायरेक्टर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्यन विभाग, श्री गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९८५५०-५७२६४

पर सशस्त्र हमला करना कोई असामान्य घटना नहीं परन्तु जंग में निहत्थे नागरिकों का कत्ल-ए-आम, उनके घर-घाट की बरबादी, धन-माल की लूट और स्त्रियों का अपमान कदापि उचित नहीं। जब बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने पंजाब में मुगलों के विरुद्ध सैनिक संघर्ष का बिगुल बजाया तो सिक्ख सैनिकों को आदेश दिया :

दोहरा ॥ नित्ता नकीब बुलाइ सो इत बिध होका द्राइ।
इतने करो ना कंम तुम सो मैं दिओं बताइ ॥ ३२ ॥
चौपई ॥ इसत्री तन जो गहिणा होई,
तांको हाथ न लाओ कोई।
पुरष पुशाक औ सिर की पाग,
इन भी कोई हत्थ न लाग ॥ ३३ ॥

अर्थात् जंग के दौरान सिक्ख सैनिकों को किसी स्त्री या उसके गहने को हाथ लगाने की मनाही थी और न ही किसी नागरिक को निर्वस्त्र करने या उसकी पगड़ी उतरवा कर अपमानित करने की इजाज़त थी। स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार मैदान-ए-जंग में से भगौड़ा या घायल हुए मुगल अफगान सैनिकों पर भी सिक्ख हमला नहीं किया करते थे।

अक्तूबर, १७६२ ई. में अहमद शाह अब्दाली श्री अमृतसर साहिब में सिक्खों पर चढ़ कर आया, परन्तु जीत के बावजूद निराश होकर वापस लाहौर लौट गया। इस अवसर पर बहुत-से अफगान सैनिक सिक्खों ने कैदी बना लिए। यूरोपियन लेखक लिखते हैं कि सिक्खों ने उनसे अमृत सरोवर, जो अहमद शाह ने मिट्टी से पाट दिया था, की सारी कार तो करवाई, मगर सिक्खों ने किसी भी पठान कैदी का निर्दयतापूर्वक कत्ल नहीं किया था।

सिक्खों के उपरोक्त जंगी व्यवहार की पुष्टि काज़ी नूर मुहमद ने अपने ''जंगनामा' में भी की है। वह लिखता है कि "सिक्खों की लड़ाई के अलावा एक और बात यह भी है कि ये नामर्द (जो लड़ाई में हथियार गिरा दे) को कभी नहीं मारते और न ही भगौड़े को घेरते हैं। स्त्री चाहे जवान हो, चाहे बूढ़ी ये उसे 'बुड्ढी'(माता) ही कहते हैं। न ही किसी स्त्री का गहना या रुपया लूटते हैं, इनमें व्यभिचार भी नहीं। न ही ये चोरी करते हैं। ये न चोरी करते हैं, न सेंध लगाते हैं और न ही चोरी करने या सेंध लगाने वाले को मित्र बनाते हैं।"

उपरोक्त साक्ष्य से स्पष्ट है कि अठारहवीं सदी के सिक्ख सैनिक उच्च नैतिक जीवन-मूल्यों के धारक थे और दुश्मन के साथ जंग के दौरान आक्रोश या क्रोध में भी इनका त्याग नहीं करते थे॥

अठारहवीं सदी में राज-सत्ता ग्रहण कर सिक्ख पंथ ने जो सिक्का व मुहर जारी की थी उन पर उकेरित शब्द :

"देगो तेग़ो फ़तहि ओ नुसरति बे दिरंग ॥
याफ़त अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ ॥"

सिद्ध करते हैं कि दुश्मन के विरुद्ध जंग में फतह किसी विशेष व्यक्ति या सरदार की प्राप्ति नहीं, बल्कि अकाल पुरख की बख़्शिश का नतीजा समझी जाती थी। जब राज-सत्ता ग्रहण की तो इसका सेहरा श्री गुरु नानक साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बख़्शिश को दिया गया। जंग में दुश्मन के हाथों जानी नुकसान हो जाने की सूरत में निराशा नहीं बल्कि चढ़दी कला में रहने का स्वभाव बना

लिया था। इसका प्रयोग बताता है कि वे असंख्य कठिनाइयों और मुसीबतों को भी हँस-हँस कर टाल देते थे। जून, १७४६ ई. में जब लखपत राय ने काहनूंवान के छोटे घल्लूघारे में खालसा दल का अत्यंत नुकसान कर दिया तो स. रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार सिक्खों का इस बारे में प्रतिक्रम था :

जो पक्के थे सो रहे, कच्चे गए सु भाज।
मरे गए सभ सुरग नो, जीए करयो तिन राज॥ ३७॥

इसी प्रकार फरवरी, १७३९ ई. में नादिर शाह दिल्ली को लूट कर भारी धन-दौलत और कीमती सामान सहित वापस ईरान को जा रहा था तो नवाब कपूर सिंघ की जत्थेदारी के अधीन सिक्खों ने उसकी नाक में दम कर दिया और उसके लूट के माल का भार भी हल्का कर दिया। लाहौर पहुँच कर उसने पंजाब के सूबेदार ख़ान बहादुर ज़करिया ख़ान से प्रश्न किया कि उसके माल को रास्ते में लूटने वाले ये लोग कौन हैं? इसका ख़ान बहादुर ने जो जवाब दिया, वह सिक्खों के युद्ध-कौशल को बाखूबी चित्रित करता है :

पूछयो नादर ने खानू आइ, ।
हम को लुट्टनहार बताइ,
जिन लुट खायो हमरो राहु।
मुलक उसै की उडा दयों स्वाहि॥ ३
तब खानूं ने ऐस बखानी।
मुलक उसै को नांहि निशानी॥
खड़े सोवैं औ चलते खांहि।
नहिं बैठे वै किते गिरारि।
नून घिरत को स्वाद न जानैं॥
हम दुख देवैं वै सुख मानैं।
हाड़ न दिन भर पीवैं पानी,
सयाले रखैं न अगन निशानी॥
नहिं खावैं वै पीसयो नाज़॥
लड़ैं बहुत वे करके भाज।
एक होइ ते सौ सौ लरैं।
मरने ते वै मूल न डरैं॥

सिक्ख पंथ की सैनिक-शक्ति का गठन श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आरंभ किया था। समकालीन स्रोतों के अनुसार उनके पास तबेले में सात सौ घोड़े, तीन सौ सवार और साठ तोपची हर समय उपस्थित रहते थे। विश्वास किया जाता है कि यह प्रबंध भविष्य में बादस्तूर जारी रहा। सिक्ख सैनिक-शक्ति का मुख्य आधार घुड़सवार थे। चाहे सिक्ख ढाल-कृपाण, तीर-कमान, नेजे, सफाजंग, बत़र, छुरी-कटारी आदि हथियारों से सुसज्जित होते थे परन्तु उनका सबसे भरोसेयोग्य हथियार कृपाण था जिसे वे अति कुशलता के साथ इस्तेमाल किया करते थे। अठारहवीं सदी के सिक्खों ने असंख्य प्रकार की कठिनाइयों को अपने तन पर झेला था। गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास बर्दाश्त करने और जंगल-बेलों, पहाड़ों, खड्डों और रेगिस्तानों में रहने के वे आदी हो चुके थे। शरीर पर पहने कपड़ों व धारण किये शस्त्रों के अलावा सिक्ख घुड़सवार के पास भुने हुए चने व गुड़ की कुछ मात्रा के अतिरिक्त दो खेस होते थे जो उसका बिस्तर बनते थे और बारिश एवं जाड़े से बचाव करते थे। शरीर को चुस्त व हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए कसरत, ख़ास कर कुश्ती और सौंची के खेल के बिना शिकार के खेल भी प्रचलित थे। काज़ी नूर मुहम्मद कहता है कि

"इनका शरीर देखें तो हर तरफ से ऐसा लगता है जैसे किसी पहाड़ी का टीला। डीलडौल में एक-एक जन पचास मर्दों से अधिक है।" शस्त्र-विद्या और अभ्यास के लिए अखाड़े लगाए जाते थे। बंदूक की मार को परखने और निशाना भेदने के लिए मिट्टी के ढेरों का प्रयोग किया जाता था। हथियारों को तीखा करने के लिए दल में ऐसे व्यक्ति भी होते थे। दल के लिए लंगर की तैयारी के लिए किसी तजुर्बेकार सिक्ख को सेवा सौंपी जाती थी। शत्रु की नकलो-हरकत पर निगरानी रखी जाती थी। किसी ऊँची जगह या पेड़ पर दूर से आते दुश्मन को देख कर ख़बर देने के लिए किसे सिंघ को टांगू बना दिया जाता था।

सिक्ख तेग़ के बड़े महान खिलाड़ी थे। काज़ी नूर मुहम्मद लिखता है कि "सिक्ख जंग में शेरों की भांति झपटते थे। यदि किसी ने लड़ाई का हुनर सीखना है तो इनसे सीखें। हे तलवारिए! यदि तुझे जंग का हुनर सीखने की चाह है तो इनसे सीख! मर्दों की भांति शत्रु के सामने कैसा होना चाहिए और कैसे लड़ाई में अपने आप को साफ़ बचाकर ले जाना चाहिए.. . जब ये लोग तेग़ थामते हैं तो सिंध तक मारोमार करते चले जाते हैं। कोई आदमी इनके सामने टिक नहीं सकता चाहे वह कितना ही बड़ा हमलावर क्यों न हो। जब ये लोग हाथ में नेज़ा पकड़ते हैं तो शत्रु की सेना में भगदड़ मचा देते हैं। जब ये नेजा उठाते हैं तो सामने चाहे कोह-काफ हो, उसे भी चीर डालते हैं। जब ये लोग कमान का चिल्ला चढ़ाते हैं तो उसमें शत्रु की जान लेने वाला तीर रखते हैं। फिर जब चिल्ला खींच कर कान तक ले जाते हैं तो शत्रु का शरीर थर-थर काँपने लगता है। जब इनका तबर (तेज गंडासा) चिल्हत (कुर्ते की शल की लौह-पोशाक) पर पड़ता है तो शत्रु के लिए वह चिल्हत ही कफन बन जाती है।"

सिक्खों का सबसे कारगर और जानलेवा हथियार, तोड़ेदार बंदूक थी। इसे वे रामजंगा कहते थे। सिक्खों द्वारा बंदूक के प्रयोग से अफगान बड़ा भय खाते थे। काज़ी नूर मुहम्मद के अनुसार, ""लड़ाई के समय जब ये बंदूक उठाते हैं तो शेरों की भांति गरजते हैं। रणभूमि में आते ही कइयों के सीने चीर डालते हैं और कइयों का लहू मिट्टी में मिला देते हैं। यूं समझो कि यह बंदूक गत समय में इन्होंने ही बनाई होगी, लुकमान ने नहीं बनाई होगी। चाहे बंदूकें तो हर तरफ़ बहुत हैं परन्तु इनसे बढ़ कर इन्हें जानने वाला और कोई नहीं। ये दायें-बाये, आगे-पीछे लगातार गोलियाँ दाग़ते हैं।" रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार, अफगान तो शिस्त चढ़ाते ही रह जाते थे जबकि सिक्ख उन्हें पहले ही अपने निशाने से मार गिराते थे। इसके अलावा चक्कर के माध्यम से अचूक निशाना लगाने में भी उन्हें बड़ी महारत हासिल थी।

खालसा दल के मुख्य तौर पर दो भाग थे—बुड्ढा दल और तरुणा दल। १७३४ ई. में नवाब कपूर सिंघ ने खालसा दल को निनलिखित पाँच जत्थों में संगठित किया :

1. पहला जत्था, बाबा दीप सिंघ जी शहीद
2. दूसरा जत्था, करम सिंघ और धरम सिंघ
3. तीसरा जत्था, काहन सिंघ और बिनोद सिंघ
4. चौथा जत्था, दसौंधा सिंघ कोट बुड्ढा

5. पांचवा जत्था, वीर सिंघ और जीवन सिंघ रंगरेटे सिंघ

इन पाँच जत्थों के जत्थेदार स्थापित करने के अलावा, इनके ठिकाने के लिए श्री अमृतसर साहिब में पाँच स्थान— रामसर साहिब, बिबेकसर साहिब, लछमणसर साहिब, कौलसर साहिब, और संतोखसर साहिब निश्चित किये गए। जत्थेदार के अलावा प्रत्येक जत्थे का अपना-अपना धौंसा/नगाड़ा और निशान साहिब था। १७४८ ई. में स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने इन पाँच जत्थों को आगे १२ मिसलों में संगठित किया, ताकि आपसी मतभेद ख़त्म कर बेहतर तालमेल पैदा किया जा सके। ये मिसलें अपने अंदरूनी प्रबंध के लिए स्वतंत्र थीं,

मगर सरबत्त खालसा में पारित हुए गुरमते के अनुसार पंथ की समूची सैनिक-शक्ति का अंग थीं। जत्थों या मिसलों को आगे दो-दो सौ के जत्थों में बाँटा गया था। इनके ऊपर भी एक-एक जत्थेदार/तुंमदार हुआ करता था। अलग-अलग जत्थों/मिसलों के सिक्ख सैनिक पहचान-हेतु अपने बैरक (छोटा झंडा/ निशान साहिब) लेकर चलते थे। दीवाली या बैसाखी पर दल खालसा श्री अमृतसर साहिब में श्री अकाल तख़्त साहिब पर जलसा करता था। इस जलसे को 'सरबत्त खालसा' कहा जाता था। इसमें गुरमता पारित कर सालाना सैनिक मुहिम के लिए किसी सिक्ख सरदार को खालसा दल का सुप्रीम कमांडर नामज़द किया जाता था। दल खालसा के अग्र भाग अर्थात् आगे बढ़ कर लड़ने वाले जत्थे को 'हरावल/ हरौल दस्ता' कहा जाता था। परिवार, माल-असबाब, नौकर-चाकर और डेरे का सामान ढोने वाले जानवरों को 'काफिला'(वहीर) कहा जाता था। इसकी सुरक्षा के लिए भी एक सैनिक टुकड़ी तैनात की जाती थी, जिसे 'थिता' कहा जाता था।

अठारहवीं सदी के सिक्खों ने अपने अनुभव के आधार पर विशेष किस्म की युद्ध-कला में महारत हासिल कर ली थी। यह कई पक्षों से बहुत विशेष थे। दुश्मन के साथ आमने-सामने की घमासान लड़ाई की जगह सिक्खों ने गुरिल्ला युद्ध-नीति अपनाई, क्योंकि उनके मुग़लों/अफ़गानों के मुकाबले सैनिक साधन बड़े सीमित थे। सिक्खों की यह युद्ध-कला, ढाई-फट्ट के नाम से प्रसिद्ध थी। युद्ध के इस ढंग के बारे स. रतन सिंघ भंगू लिखता है:

सयानन ने यौं बात सुनाई, लड़ाई के फट्ट कहैं सु ढाई।

मिलन भजन इह सार दोइ, लड़ मर मुक्रण आधा सोइ॥ ४१॥

तात्पर्य दुश्मन पर हमला करना, लड़ना और मारना, तथा दुश्मन के घेरे में से जान बचा कर निकल जाना, यह युद्ध-कला समझी जातीं थीं। दुश्मन के साथ घमासान लड़ाई में लड़ कर शहीद हो जाने को आधी युद्ध-कला के बराबर रुतबा हासिल था। इतिहास में ऐसी मिसालें भी मिलती हैं जब सिक्खों ने हार-जीत की परवाह किये बगैर दुश्मन के साथ लड़ कर शहीद हो जाने के कौशल भी दिखाए। दुश्मन के घेरे में आ जाने की सूरत में

चारों तरफ़ भाग जाने की तरकीब अपनाते थे, ताकि घेरे को तोड़ कर निकला जा सके और कम से कम जानी नुकसान हो। विरोधी को कई बार पहले वार करने का मौका भी दिया जाता था। कई बार दो चुनिंदा योद्दाओं के मध्यलड़ाई या दंगल करवा कर जीत-हार का फ़ैसला कर लिया जाता था। दुश्मन की फ़ौज को हरा देने के उपरांत उसे मारने की बजाय भगा देना अक्कमंदी समझी जाती थी, क्योंकि कई बार भागौड़ा फ़ौज भी गंभीर नुकसान कर देती है:

फ़ौज नठे नहि गैल दबय्ये॥
चपे चोर ते सट न खय्ये।
नठी जात फ़ौज भी करत जीअ पै खेल।
जाइ मरै कोई सूरमा फिर कब होवै मेल॥

अचानक और फुर्ती के साथ दुश्मन पर वार करना सिक्ख युद्ध-कला की ख़ास विशेषता था। हमले के वक्त दुश्मन के स्वभाव, युद्ध-चाल तथा मौसम को विचार कर निश्चित किया जाता था। कई बार शत्रु को याद भी नहीं होता था और सिक्ख अचानक उस पर झपट पड़ते थे। इस मकसद के लिए कई बार रातो-रात लंबे रास्ते भी तय करने पड़ते थे। १७१३ ई. में भाई बाज सिंघ ने दोआबा के फ़ौजदार शमस खान को ऐसा घेरा कि उसे भागने का मौका ही न मिला :

तउ रात को कीनी धाई।
सिखर दुपहिरे पहुंचयो जाई॥
अचाणचक्क तिस पर जा पड़ा॥
पार लीयो वह डेरे खड़ा।

अप्रैल, १७६३ ई. में स. हरी सिंघ भंगी के नेतृत्व में कसूर को फतह करने के लिए दोपहर का वक्त चुना गया जब वहाँ के पठान गर्मी से बचने के लिए तहखानों में आराम कर रहे थे। दुश्मन की नकलो-हरकत पर गहरी नज़र रखी जाती थी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने दोआबा के फ़ौजदार बाजीद ख़ान को रास्ते में उस समय घेरा जब वह कसूर को जा रहा था। इसी प्रकार १७६४ ई. में सरहिंद का सूबेदार जैन ख़ान जब शहर से बाहर मालिया उगाह रहा था तो सिक्खों ने उसे सरहिंद से बाहर घेर लिया था। कई बार दुश्मन को चकमा भी दिया जाता था। १७६४ ई. में सरदार चढ़त सिंघ ने रोहतास के किले में सरबुलन्द ख़ान को जा घेरा, मगर सफलता न मिली। सरदार चढ़त सिंघ ने चार महीने बाद घेरा उठा लिया। सरबुलंद ख़ान ने समझा कि सिक्ख वापस लौट गए हैं। सरदार चढ़त सिंघ दोबारा दरिया पार कर ऐसी फुर्ती के साथ वापस लौटा कि अफगानों को तभी ख़बर हुई जब सिक्खों की फ़ौज ने किले पर कब्ज़ा कर लिया था।

सिक्ख युद्ध-कला की यह विशेषता भी थी कि वे दुश्मन फ़ौज को ऐसा दुखी और बेचैन कर दिया करते थे कि विरोधी सैनिक थकावट के कारण व्याकुल हो जाते थे। इसी ढंग के साथ उन्होंने अपने से कहीं ज्यादा शक्तिशाली अहमद शाह अब्दाली जैसे हमलावरों के छक्के छुड़वा दिए थे। १७६५ ई. में जब अहमद शाह अब्दाली कुंजपुरा से लौट कर लाहौर के रास्ते पर जा रहा था, तो सिक्खों ने उसकी सेना पर ऐसी झपटें मारीं कि उसकी नाक में दम कर दिया। अहमद शाह अब्दाली ने सतलुज पार कर लाहौर की तरफ कूच किया तो सिक्ख घुड़सवार

दस्ते उसके आस-पास मंडराते रहते। जब मौका मिलता, बंदूकों की मार से अफगानों को मार गिराते। अहमद शाह थोड़ा-सी दूरी तय कर, शाम होने से पहले, मोर्चे बना कर अपने बचाव का उपाय करता। सुबह फिर कूच करता। सिक्ख फिर पठानों को आ घेरते। सतलुज और ब्यास के मध्य का रास्ता तय करने के लिए उसे सात दिन लगे और सातों दिन सिक्खों के साथ झपट होती रही। यदि अफगान हिमत जुटा कर सिक्खों को मारने के लिए आगे बढ़ते, तो सिक्ख पीछे भाग जाते क्योंकि पीछे भाग जाना भी उनकी युद्ध-कला का एक ढंग था। जब पीछा करने वाली अफगान सैनिक टुकड़ी मुख्य सेना से पाँच-छः कोस की दूरी पर आ जाती तो सिक्ख घुड़सवार दोनों तरफ़ से उन्हें घेर कर पलटवार कर देते थे। सिक्ख घुड़सवारों का एक दस्ता बंदूकें दाग़ कर पीछे हट जाता था और तभी दूसरा दस्ता अपनी बारी लेने के लिए आगे आ जाता था। स. रतन सिंघ (भंगू) लिखता है कि इस प्रकार की युद्ध-कला का स्वाद सिक्खों ने मराठों को भी चखाया था। काज़ी नूर मुहम्मद लिखता है कि यदि सिक्ख रण-क्षेत्र में से भाग जाएँ तो इनको भगौड़ामत समझो, क्योंकि यह भी उनकी लड़ाई का एक ढंग है। वह पठान फौजियों को चेतावनी देता है कि "देखो, इनकी इस चाल में मत फस जाना। यह ढंग इसलिए किया जाता है कि शत्रु बाकी लश्कर से अलग होकर इनके पीछे पड़ जाता है और लश्कर से अलग होकर सहायता से दूर चला जाता है। तब ये लोग पीछे लौटते हैं और पीछा करने वालों को मार कर पानी में आग लगा देते हैं।"

कई बार सिक्ख अपनी चढ़ाई के रिवायती अंदाज़ को सैनिक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वास्तविक रूप में नहीं लाते थे। ऐसे अवसर पर सैनिक कार्यवाही बड़े गुप्त ढंग के साथ भेस बदल कर की जाती थी। जब सिक्खों ने कसूर को फतह करने के लिए चढ़ाई की तो फ़ैसला किया कि बिना किसी शोर-शराबे के चुपचाप कसूर में दाख़िल हुआ जाये। न कोई निशान साहिब झुलाया, न कोई नगाड़े पर चोट मारी। सिक्ख व्यापारियों के भेस में एक-एक, दो-दो करके शहर में दाखिल हो गए। कई सौदा खरीदने के बहाने दुकानों में चले गए और कई चौराहों पर खड़े हो गए। कसूर के पठान हाकिमों को तब ख़बर हुई जब सिक्ख गढ़ी में जा घुसे।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि १८ वीं सदी का सिक्ख संघर्ष उनके ज़िंदगी-मौत के साथ हुए संघर्ष की बे-मिसाल गाथा है। सिक्ख इतिहास में यह वे समय था, जब सिक्खी विचारधारा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अपने पूरे यौवन पर थी। सैनिक शक्ति सीमित थी, किसी किले या पहाड़ की ओट भी नहीं थी। तोपखाने जैसे बड़े हथियार भी नहीं थे और न ही किसी बाहरी सैनिक-शक्ति की हिमायत हासिल थी। फिर भी सिक्खों ने अपनी विशेष प्रकार की युद्ध-कला और युद्ध-कौशल बलबूते पंजाब के मुग़ल सूबेदारों और बाद में अहमद शाह अब्दाली व उसके उत्तराधिकारियों को लाचार कर दिया था। फलस्वरूप उन्होंने उत्तर-पश्चिम में अटक तथा पूरब में दरिया यमुना तक स्वतंत्र-सिक्ख राज स्थापित कर लिया था।

अगस्त २०२५ का शेष भाग . . .

कालापानी की सेलुलर जेल में वतन की खातिर मर-मिटने वाले स्वतंत्रता सेनानी

–प्रो. किरपाल सिंह बडूंगर*

२ मई, २०१७ ई. को शिष्टमंडल के सदस्यों ने गुरुद्वारा साहिब के दर्शन किये, जहाँ उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किये जा रहे सकारात्मक कार्यों और पोर्टब्लेयर में आने के उद्देश्य से संबन्धित जानकारी सिक्ख संगत को प्रदान की। गुरुद्वारा साहिब में शिष्टमंडल के सदस्यों का सम्मान करते हुए गुरुद्वारा समिति ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान के नाम निमंत्रण-पत्र भी दिया, जो कि कार्यकारिणी सदस्य स. सुरजीत सिंह भिट्टेवड ने प्राप्त किया। इन्टरनेट पर प्राप्त सूचना के अनुसार आज़ादी की शमा के परवानों की सूची निम्नानुसार है :—

१. सरदार अमर सिंह
२. सरदार भान सिंह
३. सरदार बिशन सिंह सुपुत्र सरदार जवाला सिंह
४. सरदार बिशन सिंह सुपुत्र सरदार कसूर सिंह
५. सरदार बिशन सिंह नंबर ३
६. सरदार बिशन सिंह नंबर ४
७. सरदार चंनण सिंह
८. सरदार चतर सिंह नंबर १
९. सरदार चतर सिंह नंबर २
१०. सरदार चूहड़ सिंह
११. सरदार गुरदास सिंह
१२. सरदार गुरदित्ता सिंह
१३. सरदार गुरमुख सिंह नंबर १
१४. सरदार गुरमुख सिंह नंबर २
१५. सरदार हरदित्ता सिंह
१६. सरदार हरनाम सिंह
१७. सरदार हज़ारा सिंह
१८. सरदार हिरदा सिंह
१९. सरदार इंदर सिंह नंबर १
२०. सरदार इंदर सिंह नंबर २
२१. सरदार जावंद सिंह
२२. सरदार जवाला सिंह
२३. सरदार जीवन सिंह
२४. सरदार काला सिंह सुपुत्र सरदार घसीटा सिंह
२५. सरदार काला सिंह सुपुत्र सरदार गुलाब सिंह
२६. सरदार कपूर सिंह
२७. सरदार करतार सिंह
२८. सरदार केहर सिंह सुपुत्र सरदार निहाल सिंह
२९. सरदार केहर सिंह सुपुत्र सरदार भान सिंह
३०. सरदार केसर सिंह

* *पूर्वाध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब—१४३००१, फोन : ९९१५८-०५१००*

३१. सरदार किरपा सिंघ
३२. सरदार किरपाल सिंघ
३३. सरदार खुशाल सिंघ
३४. सरदार लखन सिंघ
३५. सरदार लाल सिंघ नंबर १
३६. सरदार लाल सिंघ नंबर २
३७. सरदार मदन सिंघ
३८. सरदार मंगल सिंघ
३९. सरदार मनोहर सिंघ
४०. सरदार मुंशा सिंघ
४१. सरदार नंद सिंघ नंबर १
४२. सरदार नंद सिंघ नंबर २
४३. सरदार नत्था सिंघ
४४. सरदार नाहर सिंघ
४५. सरदार निधान सिंघ
४६. सरदार प्यारा सिंघ
४७. सरदार प्रिथी सिंघ आज़ाद
४८. सरदार रणधीर सिंघ
४९. सरदार रोडा सिंघ जट्ट
५०. सरदार रुलिया सिंघ
५१. सरदार रोढ़ सिंघ
५२. सरदार सज्जण सिंघ
५३. सरदार सोण सिंघ
५४. सरदार समेर सिंघ
५५. सरदार शिंगारा सिंघ
५६. सरदार शिव सिंघ
५७. सरदार सोहण सिंघ
५८. सरदार सुच्चा सिंघ
५९. सरदार सुच्चा सिंघ
६०. सरदार सुरेण सिंघ
६१. सरदार सुरजण सिंघ
६२. सरदार तेजा सिंघ
६३. सरदार ठाकर सिंघ
६४. सरदार ऊधम सिंघ
६५. सरदार विसाखा सिंघ
६६. सरदार वसावा सिंघ
६७. सरदार इंदर सिंघ (तृतीय)
६८. सरदार साउण सिंघ
६९. सरदार सूजा सिंघ
७०. सरदार शेर सिंघ
७१. सरदार हज़ारा सिंघ (यह पंजाब के ज़िला श्री अमृतसर साहिब के गाँव ददेहर निवासी सरदार बेला सिंघ का पुत्र था।)
७२. सरदार हज़ारा सिंघ (यह पंजाब के ज़िला होशियारपुर के गाँव भल्लरी निवासी सरदार राजा सिंघ का पुत्र था।)
७३. सरदार हरी सिंघ कक्कड़
७४. सरदार हिरदा सिंघ
७५. श्री हिरदा राम
७६. सरदार करतार सिंघ झब्बर
७७. सरदार केहर सिंघ (यह पंजाब के ज़िला श्री अमृतसर साहिब के गाँव सरहाली निवासी

सरदार भगत सिंघ का यह पुत्र था।)

७८. सरदार खड़क सिंघ

७९. सरदार खुशहाल सिंघ

८०. श्री खुशी राम मेहता

८१. सरदार चतर सिंघ सांगला

८२. सरदार चतर सिंघ (द्वितीय)

८३. श्री चेत राम वैरोवाल

८४. श्री जगत राम

८५. सरदार नंद सिंघ (यह पंजाब के ज़िला लुधियाना के गाँव केला निवासी सरदार राम सिंघ का पुत्र था।)

८६. सरदार नंद सिंघ (द्वितीय) (वर्तमान पाकिस्तान के ज़िला लायलपुर के गाँव चक्क नंबर ५५ रुख बुर्ज के निवासी सरदार पंजाब सिंघ का यह पुत्र था।)

८७. सरदार नंद सिंघ (तृतीय) (यह पंजाब के ज़िला श्री अमृतसर साहिब के गाँव राय का बुर्ज के निवासी सरदार पंजाब सिंघ का पुत्र था।)

८८. श्री परमानन्द (भाई)

८९. सरदार पूरन सिंघ

९०. सरदार बलवंत सिंघ

९१. सरदार बिशन सिंघ (यह ज़िला श्री अमृतसर साहिब के गाँव ददेहर निवासी सरदार केसर सिंघ का पुत्र था। यह शंघाई पुलिस में कार्यरत था और ग़दर लहर के प्रभावाधीन पंजाब लौट आया था।)

९२. सरदार बिशन सिंघ (यह ज़िला श्री अमृतसर साहिब के गाँव ददेहर निवासी सरदार जवाला सिंघ का पुत्र था। मनीला से कामागाटामारू जहाज़ के माध्यम से पंजाब लौट कर इसने ग़दर लहर की गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेना आरंभ कर दिया।)

९३. सरदार बिशन सिंघ (यह पंजाब के ज़िला तरनतारन के गाँव ढोटियां के निवासी सरदार जीवन सिंघ का यह पुत्र था। २३ रिसाला फ़ौजी टुकड़ी से सबन्धित यह जवान गदरियों के साथ सहानुभूति रखता था। इसकी टुकड़ी लाहौर में तैनात थी, जब इसे उत्तर प्रदेश में पोस्ट किया गया।)

९४. सरदार बिशन सिंघ (यह पंजाब के ज़िला तरनतारन के गाँव ढोटियां निवासी सरदार राम सिंघ का पुत्र था।)

९५. सरदार बुद्धा सिंघ

९६. सरदार बुद्धा सिंघ फैलोके

९७. सरदार भान सिंघ

९८. सरदार मेहर सिंघ

९९. श्री राजा राम

१००. श्री राम हरी

१०१. श्री राम रक्षा भाले

१०२. श्री राम शरण दास

जंग-ए-आज़ादी का लंबा संघर्ष भाई महाराज

सिंघ उच्ची रब्बों (निकट खन्ना) से आरंभ हुआ और आखिरी समय अर्थात् १५ अगस्त, १९४७ ई. को आज़ादी की प्राप्ति तक बादसतूर जारी रहा, जिस दौरान हथियारबंद संघर्ष ग़दर लहर, बबर लहर के रूप में हुआ और कामागाटामारू जहाज़ (गुरु नानक जहाज़) की कलकत्ता की बजबज घाट की ख़ूनी हृदयवेधक घटना, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के दौरान १९२० से १९२५ ई. तक गुरुद्वारा बाबे दी बेर सियालकोट (अब पाकिस्तान) और गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो के मोर्चे तक ११ मोर्चे भी लगाए, जिनमें बिल्कुल शांतमयी ढंग के साथ गुरुद्वारा साहिबान को अंग्रेज़ों के पिट्ठू भ्रष्ट महंतों से आज़ाद करवा कर गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल खालसा पंथ के हवाले करने हेतु किया गया संघर्ष लंबा समय चला, मगर शांतमयी सिद्ध हुआ।

यहाँ यह भी वर्णनीय है कि कैसे गुरुद्वारा साहिबान का रखरखाव पंथ के हवाले करने हेतु शांतमयी ढंग के साथ आंदोलनरत सिंघों पर निर्दयता के साथ अत्याचार किया गया। अनेक सिंघों को शहीद कर दिया गया। कइयों को मारपीट कर, घोड़ों के पैरों तले रौंद कर, लंबा समय जेलों की काल-कोठरियों में कष्ट देकर अपाहिज कर दिया गया। ऐसे ही ज़ंग-ए-आज़ादी के दौरान अनेक ही संघर्षशील योद्धाओं को नरक से भी बदतर सेलुलर जेल (काला पानी) में असह्य और अकथनीय कष्ट देकर शहीद कर दिया गया। उस जेल के बारे में इन्टरनेट के माध्यम से मिली जानकारी इस आलेख में सम्मिलित कर रहा हूँ, ताकि पाठकों को पता चल सके कि आज़ादी के लिए पंजाबियों और ख़ास कर सिक्खों को कितनी कुर्बानियां करनी पड़ी और शहादत देनी पड़ी। सिक्ख कौम से संबन्धित संघर्षशील योद्धाओं द्वारा दिए गए बेमिसाल योगदान को जानबूझ कर अनदेखा किया गया है और यह घटिया अनैतिक घटनाक्रम आज भी जारी है। आज़ादी के बाद भी कदम-कदम पर भेदभाव किये जा रहे हैं। सेलुलर जेल काला पानी के सम्बंध में यह जानकारी निम्नानुसार है। निश्चय ही! यह सब वर्णन रौंगटे खड़े कर देने वाला है।

जेल से पहले : जब तक पोर्टब्लेयर की कालापानी की जेल या सेलुलर जेल नहीं बनी थी, तब तक कैदियों को खुले आसमान के नीचे वाईपर द्वीप (ज़हरीले साँपों का टापू) पर ले जाकर छोड़ दिया जाता था। वहाँ से किसी कैदी के भाग जाने का डर नहीं होता था, क्योंकि इसके गिर्द १० हज़ार किलोमीटर तक समुद्र ही समुद्र था। कालापानी की सज़ा काट रहे कैदियों में सबसे अधिक संख्या सिक्खों तथा पंजाबियों की थी और दूसरे नंबर पर बंगाली थे। वाईपर द्वीप में दिन भर कैदियों से जेल बनाने के लिए अपेक्षित लकड़ी कटवाई जाती और रात को भूखे-प्यासे वृक्षों के

साथ बाँध दिया जाता था। जो मर जाते (शहीद हो जाते) उन्हें बिना किसी कायदा-ए-कानून के समुद्र में बहा दिया जाता था। मोटी लकड़ियां पहाड़ी पर चढ़ाने के लिए कैदियों के पीछे रस्सी बांध दी जाती और बाद में पशुओं की भांति उनके टखनों पर तब तक डंडे मारे जाते, जब तक वे लकड़ियों को खींच कर पहाड़ी पर न चढ़ा देते। इस कार्य में असमर्थ रहने वाले कैदियों को बेहोश हो जाने तक पीटा जाता था।

जेल से संबंधित जानकारी : बेहद मज़बूत बनी सेलुलर जेल की बनावट ऐसी है कि एक कैदी दूसरे कैदी की शक्ल तक नहीं देख सकता। १३.५ फुट लंबाई और ७ फुट चौड़ाई वाली प्रत्येक सेल (काल कोठरी) में दस फुट लंबा और एक फुट चौड़ा रोशनदान बनाया गया है। एक सेल में एक ही कैदी को रखा जाता था और उसके सेल में लोहे का एक बड़ा कोल्हू और एक चक्की लगी होती थी। प्रत्येक कैदी के लिए प्रतिदिन २५ किलो नारियल का तेल निकालना ज़रूरी था। पहले पत्थर पर मार-मार कर नारियल तोड़ना और फिर उसका तेल निकालना। जो भी कैदी किसी दिन २५ किलो तेल न निकाल पाता, उसे बेरहमी के साथ पीटा जाता। काल-कोठरियों में बिजली की या अन्य किसी किस्म की रौशनी का कोई प्रबंध नहीं था। इन काल-कोठरियों में से कैदियों को तभी बाहर निकाला जाता था, जब उनसे कोई कार्य करवाना होता और या उन्हें प्रताड़ित करना होता। जब भी कोई कैदी घटिया खाने या घटिया जेल प्रबंध के बारे में आवाज़ उठाने की कोशिश करता तो उसे एक ख़ास तरह के शिकंजे में कस कर तब तक कोड़े मारे जाते, जब तक उसकी पीठ का मांस न छिल जाता।

भोजन से संबंधित जानकारी : प्रत्येक कैदी को दो बर्तन दिए जाते— एक लोहे का और एक मिट्टी का। लोहे के बर्तन में खाना दिया जाता था। लोहे के बर्तन में खाना बहुत जल्दी काला हो जाने के कारण कोई भी कैदी आवश्यकतानुसार अपने खाने को बचा कर नहीं रख सकता था। चाहे किसी को भूख होती या न, खाना तुरंत ही खाना पड़ता था। दूसरा मिट्टी का बर्तन मल-मूत्र के लिए दिया जाता था। सबसे घिनौनी बात यह थी कि यह बर्तन भी कैदी को अपने साथ काल-कोठरी में ही रखना पड़ता था। इस बर्तन को कैदी तभी साफ़ कर सकता था जब सरकारी हुक्मानुसार उसकी कोठरी का दरवाज़ा खुलता था।

पहनने के लिए वस्त्र : पहनने के लिए कैदियों को पटसन की बोरियों के बने वस्त्र दिए जाते थे और पैर नंगे रखने पड़ते थे। साधारण वस्त्र पहनने की कैदियों को इजाज़त नहीं थी। बीमारी की हालत में किसी का कोई इलाज नहीं करवाया जाता था। बीमार होकर मर जाने वाले कैदी की लाश को समुद्र में ही बहा दिया जाता था।

फांसी घर : फांसी घर समुद्र के तट पर बनाया गया था। तीन-तीन लोगों को इकट्ठा फांसी दी जाती थी। लकड़ी के मोटे शहतीर के साथ आज भी तीन रस्सियां लटक रही हैं, जिनके साथ हज़ारों महान योद्धाओं को मौत की गोद में सुला दिया गया। जेल के आंगन में आज भी वह स्थान जैसे का वैसे कायम है, जहाँ फांसी देने से पहले कैदी को आख़िरी बार स्नान कराया जाता था। पोर्टब्लेयर में दीवान सिंघ कालापानी की याद में सेलुलर जेल से थोड़ा-सा दूर बहुत सुंदर गुरुद्वारा बना हुआ है। दीवान सिंघ कालापानी उस समय के महान डॉक्टर थे। डॉक्टर होने के साथ-साथ वे बहुत बड़े साहित्यकार भी थे। उनकी रचित अनेक कवितायें तो हमें (लेखक) स्कूल में भी पढ़ाई जाती थीं, परंतु अब यह सब कुछ बंद कर दिया गया है। सज़ा के दौरान डॉ. दीवान सिंघ कालापानी के नाख़ून जंबूर से नोचे गए थे। सज़ा के दौरान ही उनकी मौत हो गई थी। अकेले वे ही नहीं, पता नहीं कितने 'दीवान सिंघ' अपने नाख़ून जंबूर द्वारा नुचवा कर देश को आज़ाद करवा गए।

जनरल डेविड बेरी : सेलुलर जेल में जेलर डेविड बेरी की तानाशाही चलती थी। वह ज़ुल्म की सारी हदें पार कर जाता था। कोड़े मारना और गालियाँ देना उसका आम कृत्य था। जनरल बेरी अधरंग का शिकार हो गया था। अंतिम समय में जब उसकी इच्छा अपने परिवार से मिलने की हुई तो जहाज़ में जाते हुए परिवार को मिले बिना ही उसकी मुत्यु हो गई। कैदियों पर ज़ुल्म करने वाला जनरल बेरी भी अपने परिवार से बिछड़ कर उसी तरह मर गया, जिस प्रकार उसके द्वारा देश-भक्तों को उनके परिवार से अलग किया गया था।

भारत का प्रत्येक व्यक्ति कालापानी की सेलुलर जेल अवश्य देखे, ताकि उसे पता चल सके कि जिस आज़ादी का आनंद हम ले रहे हैं, वो कितनी बड़ी कीमत चुकाकर हमें नसीब हुई है। तब तक देश की आज़ादी की कीमत का पता नहीं चल सकता, जब तक हम कालापानी की सज़ा काट कर देश पर से जानें कुर्बान करने वाले महान शूरवीरों की कुर्बानियों को नहीं जानते और सत्य को नहीं पहचानते।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जो आज़ादी का महल १५ अगस्त, १९४७ ई. को निर्मित किया गया और जिस आज़ादी के महल में हम सभी आज़ादी का आनंद उठा रहे हैं और संसार में आज़ाद देश के निवासी बन कर, सिर ऊँचा उठा कर गौरव के साथ विचरण कर रहे हैं उसी देश भारत में, जिन विदेशी लोगों को हमारे बुज़ुर्ग प्रथम कतार के शहरी और अपने आप को दोयम व तृतीय दर्जे के निर्बल समझ कर उनके आगे झुक कर चलते थे, अब उन्हीं अंग्रेज़ सत्ताधारियों के साथ बराबरता के एहसास द्वारा शान के साथ जी रहे हैं। इस आज़ादी के महल की ईंटें और गारा तो

महान सिंघों-शहीदों का पवित्र ख़ून और हड्डियां ही हैं।

तथाकथित राष्ट्रवादी लोगों द्वारा १९४२ ई. में 'अंग्रेज़ो, भारत छोड़ो!' का नारा दिया गया। इससे पहले तो अनगिनत देशवासियों, ख़ास कर पंजाबियों और बंगालियों ने कठोर कारावास की सजा 'देश-निकाला' का संताप भोगा और कालापानी की सेलुलर जेल में अकथनीय यातनाएं सहन करते हुए वतन पर मर मिटे। उनकी शहादत के बाद उनके मृतक शरीर को उनके परिवारों की शमूलियत के बिना किसी धार्मिक और सामाजिक मर्यादा रहित गहरे समुद्र में बहा दिया जाता था। इन संघर्षशील योद्धाओं ने अत्याचारी, ज़ालिम और निर्दयी अंग्रेज़ अहलकारों और उनके चापलूसों, मुखबिरों को मार कर अंग्रेज़ सरकार के महल की बुनियाद हिला दी थी। १९३९ ई. में आरंभ हुए द्वितीय महायुद्ध के तीन वर्ष (१९४२ ई. तक) के दौरान अंग्रेज़ सरकार बिलकुल कमज़ोर हो गई थी। अंग्रेज़ सरकार के ताबूत में आखिरी कील ६ और ९ अगस्त १९४५ ई. को हीरोशिमा तथा नागासाकी में गिराए गए परमाणु बमों ने लगा कर, अंग्रेज़ सरकार, जिनके शासन-काल में सूर्य नहीं छिपता था, हिलाकर रख दिया था। अंग्रेज़ सरकार को तो अपना मुल्क (विलायत) ही संभालना कठिन हो गया था और उसकी पकड़ ग़ुलाम देशों पर ढीली पड़ गई थी। इस प्रकार केवल हमें ही नहीं, बल्कि दुनिया के अनेक देशों को भी आज़ादी मिली।

जिस ढंग से इन महान सिक्ख संघर्षशील योद्धाओं का इतिहास मिटाया जा रहा है, वह अति निंदनीय है। यह इन महान योद्धाओं के साथ बहुत बड़ी नाइन्साफ़ी है। हम इन योद्धाओं के वारिस हैं और हम सबका फ़र्ज़-ए-अव्वल बनता है कि समय की ज़रूरत और नज़ाकत को समझें तथा अपना कौमी कर्त्तव्य जान कर, पहचान कर, समझ कर अपने महान और अद्वितीय इतिहास को सँभालने का यत्न करें, ताकि हम सब उस विलक्षण इतिहास को अपने बच्चों तक पहुँचा सकें, नहीं तो बैबेलोनिया और पंथ-विरोधी शक्तियों, जो बिना किसी कारण केवल ईर्ष्या, द्वेष, कट्टरवादी और असहनशीलता की भद्दी नीति के कारण हमें मिटाना चाहती हैं, उनका काम आसान हो जाएगा। जागो!! उठो!! सचेत हो जाओ!!!

आओ! बल धारण करें! अपना फ़र्ज़ पहचानें और कार्यशील हो जाए! फिर सभी बंधन टूट जाएंगे। पंथ-विरोधी शक्तियों के मंसूबे अपने आप ही पस्त हो जाएंगे और श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा प्रदत्त सत्य प्रकट हो जायेगा :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४२९)

वर्तमान समय के मौकाप्रस्त, मतलबप्रस्त, अभिमानी नेताओं से तो आशा ही नहीं की जा

सकती। उन्हें देश, कौम, धर्म, सामाजिक सरोकार, भाषा और संस्कृति की कोई चिंता ही नहीं, बल्कि वे तो दिन-रात अधिक से अधिक राज-शक्ति और धन-दौलत के पीछे अंधे होकर दौड़ रहे हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि कुर्बानियों और देश-भक्ति की भावना एवं कारनामों से बिल्कुल कोरी और विहीन है। ज्यादातर तो अंग्रेज सरकार के चाटुकार और गुमाश्ते ही रहे हैं। उन्होंने न तो ऐसा संघर्षशील इतिहास बनाया है और न ही इसे जानने की कोशिश की है। उनका काम तो अवसरवादी बन कर गोलमोल बातें कर, झूठे वायदे और नारे लगा कर लोगों को मूर्ख बना कर अपनी अनंत राजसी एवं आर्थिक इच्छाओं, लालसाओं की पूर्ति करना है। वे राष्ट्रीय विरसे और कौम के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से अनभिज्ञ हैं। वर्तमान नेताओं में देश-भक्ति और लोक-कल्याण अंश-मात्र भी नहीं है। वे तो पूरी तरह से परिवारप्रसती में ग्रसित हैं। आज के नेता अभिमानी हैं। वे अपनी भावी पीढ़ियों के लिए जायदाद और धन के भंडार छोड़ कर जाने के लिए ही लालायित रहते हैं।

हमारे बुद्दिजीवी भी शायद ऐसे मार्ग के ही पथिक बन गए हैं। उनकी कलमें आए दिन बिक रही हैं। वे भी धन-कुबेर वाले रास्ते अपना रहे हैं, परंतु ऐसा नहीं हो सकता। जिस कौम की बुनियाद में गुरु साहिबान, गुरु-परिवार, गुरु के लालों, गुरु के सिक्खों का पवित्र ख़ून भरा पड़ा है उस कौम को कभी मिटाया नहीं जा सकता। ज़रूरत है जागने की और जगाने की! अपनी अद्वितीय विरासत के साथ जुड़ने की! हमारा देश, हमारी अपनी मातृभूमि है, जिसकी रक्षा-सुरक्षा के लिए और जिसका मान-सम्मान, वर्चस्व बनाए रखने के लिए, इसकी सरहदों की रक्षा करने, इसे विदेशी हमलवारों से बचाए रखने के लिए हमारे बुज़ुर्गों ने कुर्बानी दी है।

किसी शायर ने उचित ही कहा है :

जद डुल्लदा ख़ून शहीदां दा,
तकदीर बदलदी कौमां दी।
रंबीआं नाल खोपर लहिंदे जद,
तसवीर बदलदी कौमां दी।
जद चरबी ढले शहीदां दी,
रूहां विच चानण हो जावे।
जद उसरे कंध मासूमां दी,
डिग्गी होई कौम खलो जावे।

खबरनामा

एआई टूल्स के माध्यम से गुरबाणी, सिक्ख इतिहास और गुरमति की गलत जानकारी देने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने लिया नोटिस

श्री अमृतसर साहिब : ३१ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्ख संगत की तरफ से मिल रही शिकायतों के मद्देनज़र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी (एआई) टूल्स के माध्यम से गुरबाणी, सिक्ख इतिहास और गुरमति की गलत जानकारी देने का नोटिस लेते हुए विभिन्न एआई प्लेटफार्मों को ईमेल पत्र भेज कर एतराज़ प्रकट किया है। जिन एआई प्लेटफार्मों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लिखा गया है, उनमें चैट जीपीटी, डीपसीक, गरोक, जैमिनी एआई, मेटा, गूगल, वीयो ३, डिस्क्रप्ट रनवे एमएल, पिकटोरी, मजिस्टो, इनवीड्यो, डेल-ई २, मिडजर्नी, डीपएआई तथा अन्य शामिल हैं।

इस सम्बंध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्ख धर्म की अपनी मौलिक परंपराएं हैं, जिनमें परिवर्तन की किसी को भी इजाज़त नहीं दी जा सकती। तकनीक के युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी के माध्यम से सिक्ख गुरु साहिबान के इतिहास तथा तसवीरों के साथ छेड़छाड़ कर सिक्ख भावनाओं को ठेस पहुंचाने की घटिया हरकतों के साथ सिक्ख भावनाओं को गहरी चोट पहुंच रही है। सिक्खों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब सर्वोच्च हैं, जिसमें दर्ज गुरबाणी के साथ किसी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं की जा सकती, जबकि ऐसी ऐप्स गुरबाणी की पावन पंक्तियों को गलत ढंग के साथ दिखा रही हैं, जोकि गुरबाणी की बेअदबी है। उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को कई एतराज़ प्राप्त हुए हैं, जिनके मद्देनज़र एआई प्लेटफार्मों को ईमेल पत्र भेज कर गलत जानकारी देने पर रोक लगाने के लिए कहा गया है।

उन्होंने कहा कि विभिन्न एआई प्लेटफार्मों पर ऐसी सामग्री मुहैया करवाई जा रही है, जिसके माध्यम से आदरणीय सिक्ख धार्मिक शख़्सियतों, पवित्र ग्रंथों और सिक्ख प्रतीकों को गलत ढंग से पेश किया जा रहा है। नौजवान पीढ़ी तकनीक के प्रयोग के माध्यम से अपने इतिहास, अपनी परंपराओं और मान्यताओं को जानने का यत्न करती है, परंतु एआई द्वारा उन्हें मिल रही अधूरी व गलत जानकारी धर्म के सिद्धांतों को चोट पहुंचाने वाली साबित हो रही है।

उन्होंने यह भी कहा कि कई गुरबाणी ऐप्स पर भी गुरबाणी शुद्ध रूप में नहीं है, जिसके बारे में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पहले ही कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने कहा कि यह बेहद संजीदा मामला है और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इस क्षेत्र में काम कर रहे लोगों एवं संस्थाओं का भी सहयोग लिया जायेगा। उन्होंने संगत से भी अपील की कि वह ऐसी ऐप्स से अधूरी जानकारी न ले, बल्कि सिक्ख इतिहास और सिक्ख परंपराओं से सम्बन्धित ऐतिहासिक स्रोतों का ही प्रयोग करें।

इसके साथ ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने भारत के गृहमंत्री श्री अमित शाह से भी अपील की कि इस संजीदा मामले के प्रति गंभीरता दिखाते हुए सरकारी तौर पर भी नोटिस लिया जाये और कोई ठोस नीति बना कर ऐसे चलन को रोकने के लिए प्रबंध किये जाएँ।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की विशेष महासभा में तख़्त साहिबान के सम्मान से सम्बन्धित अहम प्रस्ताव पारित

श्री अमृतसर साहिब : ५ अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की विशेष महासभा आज शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान कार्यालय स्थित सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में हुई, जिसमें सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी रघबीर सिंघ और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी सहित १०० के लगभग सदस्य शामिल हुए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हुज़ूरी में हुई इस महासभा के दौरान तख़्त साहिबान की मान-मर्यादा से सम्बंधित विचार-विमर्श कर एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें कौम की इन सर्वोच्च संस्थाओं के पंथक मान-सम्मान और महत्ता के वास्तविक स्वरूप को बनाए रखने के प्रति जत्थेदार साहिबान से अपील की गई।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा पेश किये गए प्रस्ताव में कहा गया कि सिक्ख धर्म अपने मौलिक इतिहास, सिद्धांतों, मर्यादा और विचारधारा की समृद्धि के कारण दुनिया के धर्मों में पृथक स्थान रखता है। तख़्त साहिबान सिक्ख पंथ की सर्वोच्च संस्थाएं हैं, जो सिक्ख इतिहास, गुरबाणी और गुरमति परंपराओं के अनुसार सिक्ख कौम को धार्मिक, पंथक, नैतिक एवं रूहानी नेतृत्व प्रदान करते हैं। प्रत्येक तख़्त साहिब की अपनी

ऐतिहासिक पृष्टभूमि और पंथक महत्ता के साथ-साथ क्षेत्रीय विशेषता सिक्ख मर्यादा का हिस्सा है, जबकि महत्वपूर्ण यह है कि सभी तख़्त साहिबान एक ही गुरु-मर्यादा और गुरु-आदेश के अधीन हैं। छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा स्थापित प्रभुसत्ता-सम्पन्न हस्ती श्री अकाल तख़्त साहिब सिक्खों के लिए ईश्वरीय आदेश का स्थान है। यह धर्म के साथ-साथ पंथक और राजनैतिक नेतृत्व के लिए भी मार्गदर्शक है।

प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि सिक्ख कौम के पाँच तख़्त साहिबान अपनी-अपनी जगह बड़ी अहमियत रखते हैं, लेकिन श्री अकाल तख़्त साहिब की सर्वोच्चता पंथ द्वारा प्रवानित और सम्मानित है। सिक्खों के कौमी मसले श्री अकाल तख़्त साहिब पर पाँच सिंघ साहिबान द्वारा विचारे जाने और निर्णय करने का सर्वप्रवानित विधान है। शेष तख़्त साहिबान का स्थानीय स्तर पर मामलों को संबोधित होना भी सिक्ख रहित मर्यादा की दिशा में अधिकारित है। इसके मद्देनज़र महासभा के दौरान कौमी इतिहास, मर्यादा, परंपराओं और स्थापि के विधि-विधान की रौशनी में तख़्त साहिबान के मान-सम्मान एवं अधिकारों का सम्मान करते हुए जत्थेदार साहिबान से अपील की गई कि किसी भी मामले पर फ़ैसला लेते समय पंथक रिवायतों को नज़रंदाज़ न किया जाये। कौमी फ़ैसले श्री अकाल तख़्त साहिब से लेने की रिवायत है और लिए जाते रहेंगे, परंतु अन्य चार तख़्त साहिबान से सम्बन्धित स्थानीय मामलों में उनके परामर्श के बिना दख़ल न दिया जाये। यदि कोई ऐसा मामला विचाराधीन आए तो दीर्घ विचार-विमर्श के बाद ही कोई फ़ैसला किया जाये। इसमें सम्बन्धित तख़्त साहिब के जत्थेदार साहिब को फ़ैसले का हिस्सा लाज़िमी बनाया जाये। साझी राय न बनने पर उस मामले के प्रति जल्दी में फ़ैसला न हो। विशेष कारणों से तुरंत फ़ैसला लिए जाने के हालात को छोड़ कर पाँच सिंघ साहिबान की मीटिंग कुछ दिन पहले एलान की जाये। यदि किसी तख़्त साहिब से जत्थेदार साहिब किसी कारण मीटिंग में शामिल न हो सकें तो श्री अकाल तख़्त साहिब के १९ नवंबर, २००३ ई. को पारित किये गए प्रस्ताव की रौशनी में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के सिंघ साहिबान में से ही कोई एक सिंघ साहिब शामिल किये जाएँ।

इसके अलावा विश्वविद्यालयों में आरएसएस का दख़ल, पंजाब सरकार द्वारा बेअदबी से सम्बन्धित लाए गए प्रस्ताव, पंजाब सरकार द्वारा अपने स्तर पर सिक्ख संस्थाओं के मुकाबले नवम पातशाह की ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी के समय गुरमति समारोह आयोजित करने की ज़िद और राम रहीम को बार-बार पैरोल दिए जाने की कड़ी निंदा की गई। समारोह के दौरान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी के अलावा पूर्व प्रधान बीबी

जगीर कौर, सदस्य भाई रजिंदर सिंघ महिता, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, स. जसवंत सिंघ पुड़ैण, बीबी किरनजोत कौर तथा मुख्य सचिव स. कुलवंत सिंघ मंनण ने भी संबोधित किया।

महासभा के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि यह महासभा बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे पर आयोजित की गई थी, जिसमें प्रत्येक वक्ता ने संजीदगी दिखाते हुए भावपूर्ण विचार प्रदान किए हैं। उन्होंने महासभा में उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यवाद करते हुए कहा कि वे भविष्य में भी उनसे ऐसे ही सहयोग की आशा करते हैं। उन्होंने पारित किये प्रस्ताव के बारे में बात करते हुए कहा कि वर्तमान समय में इस बात की खास ज़रूरत है कि तख़्त साहिबान के मान-सम्मान को किसी तरह की ठेस न पहुँचे। सिक्ख पंथ की गौरवमयी परंपराओं, सिद्धांतों, रीति-रिवाज़ों, पंथक शानो-शौकत व कौमी संस्थाओं के मान-सम्मान एवं महत्व को असली रूप में बनाए रखने के लिए यह बेहद ज़रूरी है।

एडवोकेट धामी ने अमेरिका में बुज़ुर्ग सिक्ख पर हुए नसली हमले की निंदा की

श्री अमृतसर साहिब : १३ अगस्त : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अमेरिका स्थित कैलिफोर्निया के नॉर्थ हालीवुड में स. हरपाल सिंघ नामक बुज़ुर्ग सिक्ख पर हुए नसली हमले की कड़ी निंदा करते हुए इस घटना के दोषियों के ख़िलाफ़ कार्यवाई करने की माँग की है। एडवोकेट धामी ने कहा कि कैलिफोर्निया में बुज़ुर्ग सिक्ख पर हमला कर उसे गंभीर रूप से ज़ख़्मी कर देने की ख़बर अति दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में विभिन्न देशों में सिक्ख उच्च पदों पर कार्यरत हैं और वे जिस भी क्षेत्र में बसे हैं, उन्होंने वहाँ के विकास में अहम योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि सिक्खों के विरुद्ध ऐसी नफ़रती घटनाएँ घटित होने से कौम में आक्रोश पैदा होना स्वाभाविक है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि समूह मानवता का भला चाहने वाले सिक्खों पर विदेशों में नसली हमले होना बेहद दुर्भाग्पूर्ण बात है। उन्होंने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से अपील की कि वह विदेशों में बसे सिक्खों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए।

सिक्खों की सैन्य-कला का एक नमूना : गतका

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

September 2025

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

भाई बचित्तर सिंघ जी

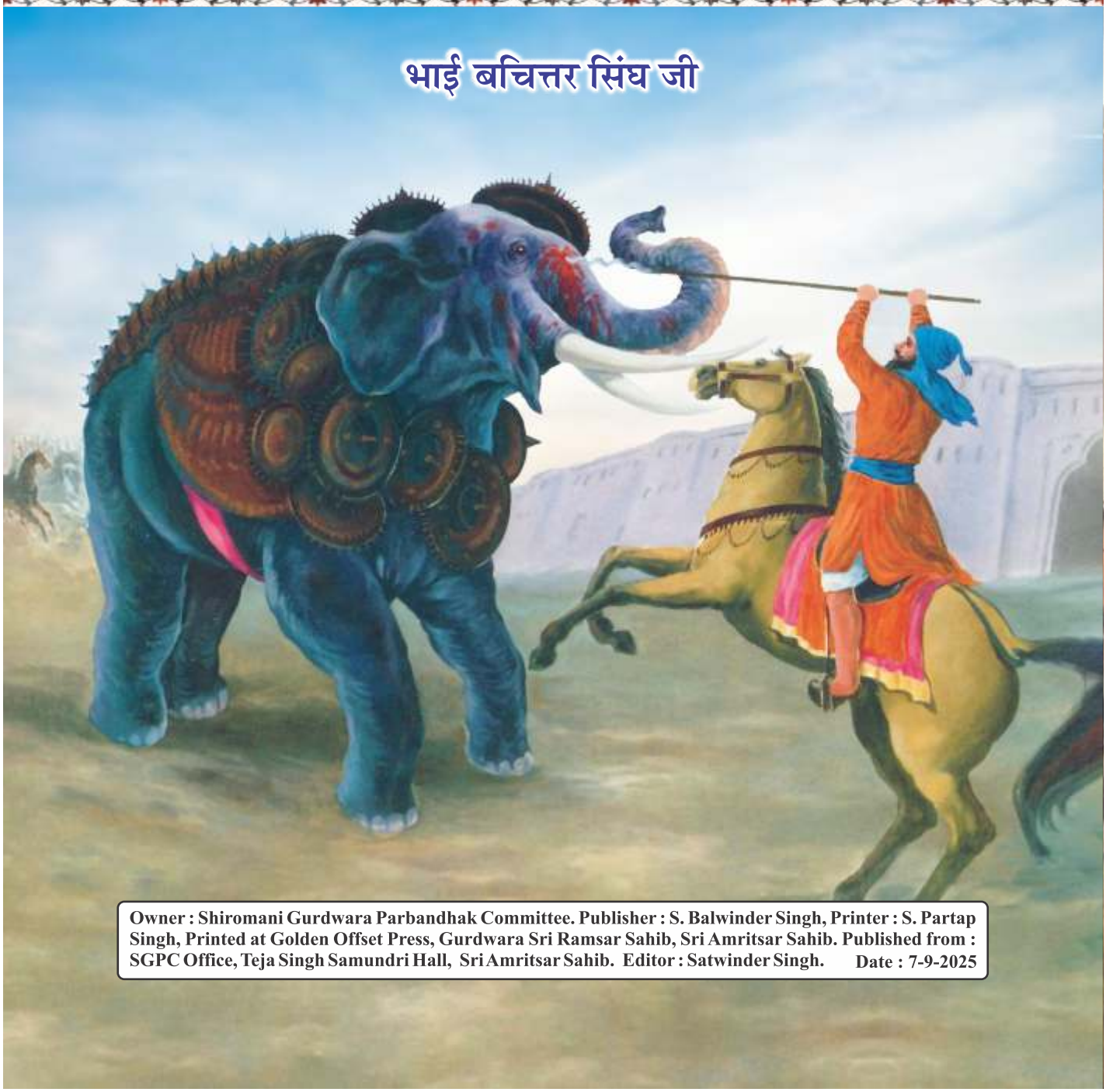

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 7-9-2025